

BANGALORE CITY UNIVERSITY
STUDY MATERIAL

काव्य रंजन

KAVYA RANJAN

बी.कॉम/एम.बी.एस/बी.कॉम(हानर्स)/बी.कॉम(इन्शुरेन्स)

(ए.ई.सी.सी. भाषा तहत)

B.Com/M.B.S/B.Com(Hon)/B.Com(Insurance)
(Language under AECC)

तृतीय सेमिस्टर/III Semester

BY : Dr. SRILALITHA
HEAD OF HINDI DEPARTMENT
BANGALURU

अनुक्रमिका

१. साखी सुधा-कबीर दास	1-9
२. बाल लीला-सूरदास	10-15
३. रहीम के दोहे-रहीम	16-27
४. यह धरती कितना देती है-सुमित्रानंदन पंत	28-37
५. फूल और काँट-अयोध्यासिंह 'अमर' शर्मा	38-44
६. माँ के प्रति-स्वदेश भारती	45-51
७. मोम दीप मेघ - माखनलाल	52-58
८. सन्ध्या सुन्दरी - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	59-66
९. समान्य सरकारी पत्र	67-75
१०. परिपत्र	76-80
११. कार्यालय - आदेश	81-85
१२. अधिसूचना	86-90
१३. प्रशासनिक शब्दावली	91-92
१४. नमूने प्रश्न पत्र	93

1. साखी सुधा
-कबीरदास

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।
१. 'साखी सुधा' दोहे का कवि कौन है?
साखी सुधा दोहे का कवि कबीरदास जी है।
२. कबीर जी का पालन-पोषण कौन करते है?
नीरु और नीमा जुलुहा दंपति ने कबीर जी का पालन-पोषण किया।
३. कबीर जी का पत्नी और बच्चों का नाम क्या है?
पत्नी का नाम लोई और बच्चों का नाम कमल और कमली है।
४. कबीर जी का गुरु का नाम क्या है?
गुरु रमानन्द जी है।
५. किस का मार्ग बहुत कठीन होता है?
संत का मार्ग बहुत कठीन होता है।
६. कबीर जी किसका फल खाने को कहता है?
खजूर का फल खाने के लिए कहता है।
७. जीवन बर्बाद की संभावना कब होता है?
घर में धन की अधिकता हो जाए तो जीवन बर्बाद होने का संभावना हो जाता है।
८. कबीर जी व्यक्ति को क्या सलाह देता है?

१७. दुबार किस को नहीं जुड़ने के लिए नहीं होता है?

कुम्हार के घड़े टूटने की तरह विपरीत बुरे या दृष्ट लोगों को कभी नहीं जुड़ा सकते हैं।

१८. किस का वाणी अनमोल रत्न है?

जो अच्छी वाणी बोलता है वही जानता है कि वाणी अनमोल रत्न है।

१९. मुख से क्या तोलकर बाहर आते हैं और क्यों?

हृदय रूपी तराजू से शब्दों को तोलकर ही मुख से बाहर आ सकते हैं।

२. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

१. साधु कहावत कठिन है, लांबा पेड़ खजूर।

चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकनाचुर।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक गायक पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीरदास जी कहते हैं कि संत होना कठिन है क्योंकि आराधना मार्ग पर जाना तो बहुत कठिन होता है इसका तुलना खजूर पेड़ के साथ जुड़ा है।

व्याख्या :- संत का मार्ग कठिन है। ईश्वर की आराधना का मार्ग है यह जो अति कठिन है। जैसे लंबा पेड़ हो खजूर का और फल खाने हों तो उस तक फलों तक जाना होगा। इन फलों को पत्थर मारके नहीं तोड़ा जा सकता। भक्ति की इस ऊंचाई तक चढ़के व्यक्ति फिर परमानंद को पा लेता है। सच्चिदानंद को प्राप्त होता है। लेकिन अगर गिर गया तो दोनों तरफ से जाता है भक्ति से भी संसार से भी। अटल निष्ठा चाहिए इस मार्ग में। मधुर फल खाना भक्ति का बहुत कठिन है। यह खजूर के पेड़ पर चढ़ने के समान श्रम साध्य है।

माला को फेरना छोड़ कर मन के मोतियों बदल ने का सलाहा देता है।

१. कबीर जी किस से देह नष्ट होता है करके कहा है?

पानी के बुलबुले से मनुष्य का शरीर नष्ट होता है।

१०. साधु का जाति क्यों पूछना नहीं चाहिए ?

क्योंकि वहा साधु का ज्ञान को देखना चाहिए।

११. साधु का जाति किस के समान है?

साधु की जाति तलवार के म्यान के समान है और ज्ञान तलवार की धार के समान है।

१२. दया और लोभ कहा रहता है?

जहा दया है वहीं धर्म है और जहा लोभ है वहीं पाप होता है।

१३. क्रोध और क्षमा कहा वास करता है?

जहा क्रोध है वहां सर्वनाश है और जहा क्षमा है वहां ईश्वर का वास होता है।

१४. ईश्वर का ध्यान कब करते हैं?

बीता समय निकल गया, आपने ना ही कोई परोपकार किया और नहीं ईश्वर का ध्यान करना है।

१५. कब चिड़िया खेत में चुग जाती है ?

बीता समय और परोपकार और ईश्वर का ध्यान नहीं पछताने से चिड़िया खेत में चुग जाती है।

१६. कबीर जी किस जोड़ सकते हैं करके कहता है?

सोने को सौ बार तोड़ ने क्लृप्त भी फिर से जोड़ सकते हैं।

2. जो जल बढई नाव में, घर में बाढई दाम ।

दोनो हाथ उलीचि, यही सज्जन को काम ।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीरदास जी कहता है कि नाव और जल के बारे कहते हुए घर और दाम के बारे में कह कर सज्जन के बारे में कहता है।

व्याख्या :- प्रस्तुत दोहे में कवि कबीर कहते हैं कि जैसे नाव में पानी भर जाता है और नाव के डूबने की संभावना बनें जाती है, ठीक वैसे ही अगर घर में धन की अधिकता हो जाए तो जीवन को भी बर्बाद होने की संभावना हो जाती है। इसलिए जैसे हम नैव से दोनों हाथों से जल उलीच देते हैं यानी कि जल्द ही बाहर फेंक देते हैं उसी तरह अत्यधिक जमा धन को भी तुरंत ही दान करके खर्च देना चाहिए नहीं तो वो हमारे जीवन को तबाह कर देगा।

3. माला फेरत जग मुअ, गया न मन का फेर ।

कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर ।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीर जी कहता है कि कोई भी व्यक्ति का मन या भाव के बारे में वर्णन किया है।

व्याख्या :- कोई व्यक्ति लम्बे समय तक हाथ में लेक्क माला की माला तो घुमाता है, पर उसके मन का भाव नहीं बदलता, उसके मन की हलचल शांत नहीं होती, कबीर की ऐसे व्यक्ति को सलाह है कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन के मोतियों को बदल ने को कहता है।

4. पानी केग बुदबुद, अस मानुस की जात ।

देखत ही छिय जाणा, जो तारा परभाती ।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीर जी कहते हैं पानी के बुलबुले के प्रकार और मनुष्य के शरीर के नष्ट के बारे में कहता है।

व्याख्या :- कबीर का कथन है कि जैसे पानी के बुलबुले, इसी प्रकार मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर है। जैसे प्रभाव होते ही तारे छिप जाते हैं, वैसे ही ये देह भी एक दिन नष्ट हो जाएगी। आपको पसंद आती होगी। कृपया अपने बहुमूल्य सुझाव देकर हमें यह बताने का कष्ट करें और ज्यादा बेहतर कैसे बनाया जा सकता है? आपके सुझाव और भी अधिक उद्देशपूर्ण और सफल बनने में सहायक होंगे।

4. चलती चक्की देखि करि, दिया कबीरा रोय ।

दो पादन के बीच में, साबित बचा न कोई ।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीर जी कहता है कि चलती चक्की को देखकर कबीर दास जी के आँसू निकल जाते हैं और वो कहते हैं कि चक्की के पादों के बीच में कुछ साबुत नहीं बचता।

व्याख्या :- कबीर दास जी स्पष्ट तौर पर समाज में व्याप्त बुराइयों पर कटाक्ष करते हैं। वह कहते हैं कि अज्ञानता के कारण समाज में व्याप्त कुभितियों आदि में फँसकर एक सभ्य व्यक्ति के दो पादों के बीच अज्ञान। कबीरदास कहना चाहते हैं यह दुनिया मायाजाल है इस मायाजाल में पड़कर सभी प्रकार के मानुष भिस्ते जा रहे हैं।

विशेषता :- चाहे छोटा हो चाहे बड़ा हो कोई भी इस मायाजाल से नहीं बच रहा है।

4. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए जन ।

मोल कयो तलवार का, पडा रहने दो म्यान ।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीर जी कहता है कि साधु का जाति नहीं पूछना उनका ज्ञान को देखना और तलवार लेने के वक्त उपर का म्यान नहीं देखना उसकी अंदर होने वाले तलवार को देखना है।

व्याख्या : कबीर दास जी कहते हैं, सच्चा साधु सब प्रकार के भेदभावों से ऊपर उठा हुआ माना जाता है। साधू से यह कभी नहीं पूछा जाता की वह किस जाति का है उसका ज्ञान ही, उसका सम्मान करने के लिए पर्याप्त है। जिस प्रकार एक तलवार का मोल का आँकलन उसकी धार के आधार पर किया जाता है ना की उसके म्यान के आधार पर ठीक उसी प्रकार, एक साधु की जाति भी तलवार के म्यान के समान है और उसका ज्ञान तलवार की धार के समान।

७. जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहाँ पाप।

जहाँ क्रोध तहाँ काल है, जहाँ क्षमा तहे आप।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीर जी कि कहना है कि कोई जगह में दया या करुणा का भाव वहाँ जगह या आदमी संतुलन रहता है। कोई जगह सभी पाप हि भरा हुआ तो वहा काल ही हो जाता है।

व्याख्या :- कबीर दास जी कहते हैं कि जहाँ दया है वहीं धर्म है और जहाँ लोभ है वहाँ पाप है, और जहाँ क्रोध है वहाँ सर्वनाश है और जहाँ क्षमा है वहाँ ईश्वर का वास होता है।

इंसान अपने सुख दुख के लिए खुद के लिए खुद जिम्मेदार होता है। देव और असुर हमारे मन में ही होते है हमारे विचार हमें सज्जन या दुर्जन बनाते है। जिन लोगों के मन में सबके लिए प्रेम होता है वे कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते सबके लिए मन में सबकी गलतियों को माफ़ कर सकते है सब के लिए उनके मन में सिर्फ दया होता है। वही लोग सज्जन व्यक्ति हैं इनका जहा वास होता है ईश्वर वही वास करते है। जिन लोगों के पास इर्षा लोभ होता है। उन्हें बहुत जल्दी गुस्सा भी आता है उनके

मन में कभी किसी के लिए दया भाव नहीं होती है और अपने असुरिक विचार के कारण अह समाज और खुद का सिर्फ अनहित ही करते है।

८. अच्छे दिन पाछे गए, हरी सो किया न हेत।

अब पछताए होत का, चिड़िया चुग गई खेत।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीर दास जी कहते हैं कि बीता समय निकल गया, अपने ना ही कोई परोपकार किया और नाही ईश्वर का ध्यान किया। अब पछताने से क्या होता है, जब चिड़िया चुग गयी खेत।

व्याख्या :- कबीर जी कहते है कि जब समय था तब तो हरी को याद नहीं किया अब पछताने से क्या होगा जब समय ही शेष नहीं बचा है, चिड़िया ने खेत को चुग लिया है अब क्या किया जा सकता है जब आयु ही पूर्ण होने को आई है, बुढ़ापा आ चुका अब हाथ मलने से कुछ हाशिल होने को आई है, माया के भ्रम जाल को करना ही समझदारी का कार्य है। लेकिन नजर क्यों नहीं आता है, क्योंकि बाहर भटकाव है, और अंदर अँधेरा। इस अँधेरे को सत्य के दीपक से दूर किया जा सकता है। मार्ग कठिन है लेकिन असम्भव भी नहीं है।

९. सोना सज्जन साधु जन, टूटी जुरे सौ बार।

दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दयार।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीर दास जी कहते है कि सोने को अगर सौ बार भी तोड़ा जाए, तो भी उसे फिर जोड़ा जा सकता है। इसी तरह भले मनुष्य हर अवस्था में भले ही रहते है। इसके विपरीत बुरे या दुष्ट लोग कुम्हार के घड़े की तरह होते है जो एक बार टूटने पर दुबारा कभी नहीं जुड़ता।

व्याख्या :- कबीर जी कहते हैं कि संतजन और सज्जन व्यक्ति सोने के समान होते हैं जो सौ बार टूटकर भी फिर जुड़ जाते हैं। दुर्जन व्यक्ति कुम्हार के घड़े के समान होते हैं जो एक धक्के से ही टूट जाते हैं और दुबारा नहीं जुड़ते हैं। भाव है की दुर्जाण व्यक्ति मन के काले होते हैं, मन में मेल रकते हैं और मौका मिलते ही अपना वास्तविक रूप दिखा देते हैं दुर्जन से एक बात को भुला देता है और पुनः दोस्त बनाया जा सकता है। संजन का स्वभाव सरल और दुष्टजन का स्वभाव मलिन होता है।

१०. बोली एक अनमोल है, जो कोई बोले ज़मि।

हिंये तसजू तौलिके, तव मुख बाहर आनि।।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक पद से लिया गया है। इसका लेखक है 'कबीरदास' जी है।

संदर्भ :- कबीर जी कहते हैं कि जो व्यक्ति अच्छी वाणी बोलता है वही जानता है कि वाणी अनमोल रत्न है। इसके लिए हृदय रूपी तराजू में शब्दों को तोलकर ही मुख से बाहर आने दें।

व्याख्या :- कबीर जी कहते हैं कि यदि कोई सही तरीके से बोलना जानता है तो उसे पता है कि वाणी एक अमूल्य रत्न है। इस लिए वह हृदय के तराजू में तोलकर ही उसे मुंह से बाहर आने देता है।

३. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. कबीरदास जी के अनुसार दया, धर्म, लोभ, क्रोध और क्षमा के बारे अपने वाक्यों में लिखिए।

यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'साखी सुधा' नामक दोहे से लिया गया है। जिसका लेखक 'कबीरदास' जी है।

कबीर जी कि कहना है कि कोई जगह में दया या करुणा का भाव वहाँ जगह या आदमी संतुलन रहता है। कोई जगह सभी पाप हि भरा हुआ तो वहा काल ही हो

जाता है। कबीर दास जी कहते हैं कि जहाँ दया है वही धर्म है और जहाँ लोभ है वहाँ पाप है, और जहाँ क्रोध है वहाँ सर्वनाश है और जहाँ क्षमा है वहाँ ईश्वर का वास होता है। इसान अपने सुख दुख के लिए खुद के लिए खुद जिम्मेदार होता है। देव और असुर हमारे मन में ही होते हैं हमारे विचार हमें सज्जन या दुर्जन बनाते हैं। जिन लोगों के मन में सबके लिए प्रेम होता है वे कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते सबके लिए मन में सबकी गलतियों को माफ़ कर सकते हैं सब के लिए उनके मन में सिर्फ दया होता है। वही लोग सज्जन व्यक्ति हैं इनका जहा वास होता है ईश्वर वही वास करते हैं। जिन लोगों के पास ईर्ष्या लोभ होता है। उन्हें बहुत जल्दी गुस्सा भी आता है उनके मन में कभी किसी के लिए दया भाव नहीं होती है और अपने असुरिक विचार के कारण है समाज और खुद का सिर्फ अहित ही करते हैं। इसी तरह कबीर जी जहा दया होता है वहा धर्म होता है, जहा लोभ होता है वहा पाप होता है, जहा क्रोध होता है वहा मरण होता और जहा क्षमा करने का गुण होता है वहा आप रहते हैं।

१. बाल लीला -सूरदास

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य या वाक्यांश में लिखिए।

१. 'बाल लीला' पद का लेखक कौन है?

'बाल लीला' पद का लेखक सूरदास जी है।

२. सूरदास जी का जन्म किस परिवार में हुआ था?

सूरदास जी का जन्म सारस्वत ब्राम्हण परिवार में हुआ था।

३. सूरदास जी किस से दीक्षा लिया था?

सूरदास जी वल्लभाचार्य जी से दीक्षा लिया था।

४. श्री कृष्ण यशोदा से किसका शिकायत किया था?

श्री कृष्ण यशोदा से भाई बलराम का शिकायत किया था।

५. श्री कृष्ण जी का शरीर कौन-सा रंग था?

श्री कृष्ण जी का शरीर श्याम/सौवत्सा रंग का था।

६. यशोदा बलराम के बारे में क्या कहा था?

बलराम जन्म से ही चालाक और चुगत्तखोर है।

७. यशोदा किस का सौगंध करती है?

यशोदा गोकुलों का सौगंध करती है।

८. रामकली में सूरदास श्री कृष्ण का कौन-सा वर्णन किया है?

श्री कृष्ण की बालमुलभ चेष्टा का वर्णन किया है।

९. श्री कृष्ण किस को बुलाते हैं?

श्री कृष्ण काली-श्वेत गायों को बुलाते हैं।

१०. श्री कृष्ण किस को पुकारते हैं?

श्री कृष्ण अपनी नंदबाबा को पुकारते हैं।

११. श्री कृष्ण किस को देखकर माखन खिलते हैं?

श्री कृष्ण खम्भे में अपना ही प्रतिबिंब देखकर उसे माखन खिलते हैं।

१२. यशोदा किस से प्रसन्न हो जाती है?

यशोदा श्री कृष्ण की सभी लीलाओं को देखकर प्रसन्न हो जाती है।

१३. यशोदा क्या देखकर हर्षती है?

श्री कृष्ण की बाल-लीलाओं को देखकर नित्य हर्षती है।

१४. कौन श्री मुख देखकर उल्लासित हो जाते थे?

ब्रजवासी श्रीमुख देखकर उल्लासित हो जाते थे।

१५. सूरदास जी ने 'बाल लीला' में किस का वर्णन किया है?

श्रीकृष्ण की बालमुलभ चेष्टा का वर्णन किया है।

२. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

१. सुत मुख देखि जसोदा फूली

हरषति देखि दूधि की दँतियाँ, प्रेम तन की सुधि भूली।

बाहर तै तब नंद बुलाए, देखो धौ सुंदर सुखदाई।

तनक तनक सी दूध दंतुलियाँ, देखौ,

नैन सफल करो आई।

आनंद सहित महर तब आए,

मुख चितवत दोऊ नैन अघाई।

सूर स्याम किलकत द्विज देख्यो,

मनो कमल पर बिज्जू जमाई ॥

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'बाल लीला' नामक पद से लिया गया है। इसकी रचयिता सूरदास जी हैं।

संदर्भ :- इन पंक्तियों को कवि ने श्रीकृष्ण जी का बाल लीला और उनकी दाँत के बारे में वर्णन किया है।

व्याख्या :- श्री कृष्ण के दाँत निकलने पर यशोदा माता की खुशी का पारावा नहीं रहता। अपने बेटे का मुख देखकर माता यशोदा बहुत खुश हुई। बहुत हर्ष के साथ अपने बेटे के दूध की दाँत को देखकर लाड-प्यार में मग्न यशोदा का होश को गया है। वह बाहर से अपने पतिदेव नन्द को बुलाकर पुत्र का सुंदर रूप देखने को कहती

है। पुत्र के छोटे-छोटे दाँत को देखकर उसकी आँखें सफल होती है। उनके मुख और दृष्टि खुशी से भर गए। माता झुलती है और 'प्यारे लाल' कह-कहकर गाती है। सूरदास कहते हैं कि किलकारी करनेवाले कृष्ण के दाँतों को देखकर ऐसा लगता है मानों कमल पर बिजली जम गई है।

विशेषता :- राग रामकली में आबद्ध इस पद में सूरदास ने कृष्ण की बालसुलभ चेष्टा का वर्णन किया है।

२. हरि अपने आंगन कछु गावत।

तनक तनक चरानि सौ नाचत, मनहि रिझावत।
बाँह उठाई कजरी धीरी, गैयनि टेरी बुलावत।

कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत।
माखन तनक आपने कर लै, तनक बदन मे नाचत।

कबहुँक चितै पोरतिबिम्ब खम्ब मैं, लौनी लिए खवावत।
देखती जसुमति वह लीला हष आनंद बढ़ावत।

सूर स्याम के बाल चरित, नित नितही देखत भवत ॥

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाद्य पुस्तक के 'बाल लीला' नामक पद से लिया गया है। इसकी रचयिता सूरदास जी हैं।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद कवि कहते हैं कि श्री कृष्ण जी तो अब थोड़ा बड़े हो गए हैं और अपने पैरों पर चलना और आँगन में नाचना देखकर यशोदा बहुत आनन्दित हो रही है। कवि ने श्री कृष्ण जी का नाचने का वर्णन करते हैं।

व्याख्या :- कवि कहता है कि स्यामसुन्दर अपने आँगन में कुछ गा रहे हैं। वे अपने नन्हें चरणों से नाचते जाते हैं और अपने-आप अपने ही चित को आनन्दित कर रहे हैं। कभी दोनों हाथ उठाकर 'कजरी' 'धौरी' आदि नामों से गायों को पुकारकर बुलाते हैं, कभी नन्द बाबा को पुकारते हैं और कभी आँगन से घर के भीतर चले आते हैं। अपने हाथ पर थोड़ा-सा मक्खन लेकर छोटे-से मुख में डालते हैं, कभी मणिमय खम्भे में अपना प्रतिबिम्ब देखकर उससे अन्ध बालक समझकर मक्खन लेकर उसे खिलाते हैं और स्वयं भी खाते हैं। श्री कृष्ण की बाल-लीला को माता यशोदा

जी छिप-छिपकर देखती है और मन ही मन दर्शित होती हुई। उनमें नित्य नवीन आनन्द मिलता है।

विशेषता :- बालक कृष्ण की लीलाओं का सहज, स्वाभाविक, वात्सल्य रस का चित्रण किया है। भाषा ब्रज है।

३. मैया मोहि दाक बहुत खोजायो।

मोसो कहत मोल को लीनहैं, तू जसुमती कब जायो।

कहा करौ यही रिस के मारे खेलन हो नहि जातु।
पुनि पुनि कहत, कौन है मात को है तुझरे तातु।

गोरे नंद जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर।

चुटकी दे दे हंसत बाल सब, सिखई देत बलवीर।

तू मोही को मारने सीखी दाऊही कबहुँ खीझई।

मोहन को रिससमेत लखि, जसुमति सुनी सुनी रीझव।

सुनह कान्हा बलभद्र चबाई जनमत ही को धूर्त।

सूर स्याम मो गोधन की साँ हो माता तू पूत ॥

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाद्य पुस्तक के 'बाल लीला' नामक पद से लिया गया है। इसकी रचयिता सूरदास जी हैं।

संदर्भ :- श्री कृष्ण यशोदा माता से बलराम भाई की शिकायत करते हुए कहते हैं कि मैया मुझे बलराम भैया बहुत चिढ़ाते हैं मुझे कहते हैं कि तुम को खरीदा गया है, मोल लिया गया है तुम्हें यशोदा माता ने जन्म नहीं दिया। क्या करूँ, इसी क्रोध के कारण मैं खेलने नहीं जाता।

व्याख्या :- श्री कृष्ण यशोदा माता से बलराम भाई की शिकायत करते हुए कहते मैया मुझे बलराम भैया बहुत चिढ़ाते हैं मुझे कहते हैं कि तुम को खरीदा गया है, मोल लिया गया है तुम्हें यशोदा माता ने जन्म नहीं दिया। क्या करूँ, इसी क्रोध के कारण मैं खेलने नहीं जाता।

वह बार-बार मुझसे कहते हैं कि तेरी माता कौन है, तेरे पिता कौन है तुम्हारा शरिर इय्यम रंग का है। इसी कारण सब वाल बाल मुझे ताने दे देकर हैंसते हैं

बलराम भाई ने सब यह सिखा दिया है। कृष्ण यशोदा माता से कहते हैं कि तुम तो मुझको ही मारना जानती हो बलराम भैया को कुछ भी नहीं कहती है श्री कृष्ण के मुख से यह क्रोध भरी बातें सुनकर यशोदा माता मन ही मन प्रसन्न हो जाती है। वह कहती है हे कान्हा सुनो बलराम तो जन्म से ही चालक और चुगलखोर है। सूरदास जी कहते हैं कि यशोदा माता कहती है कि हे कृष्ण मुझे गोऊओं की सौगंध है मैं ही तुम्हारी माता हूँ और तुम मेरे पुत्र हो।

विशेषता : बालक कृष्ण की लीलाओं का सहज, स्वाभाविक, वात्सल्य रस का चित्रण है। श्री कृष्ण अपनी माता यशोदा को अपने भाई की शिकायत का वर्णन किया है। भाषा बज्र है।

३. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. सूरदास जी ने 'बाल लीला' पद के अनुसार श्री कृष्ण जी ने माता यशोदा जी को भैया बलराम जी का शिकायत कैसे किया अपने शब्दों में लिखिए।

यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'बाल लीला' नामक पद से लिया गया है। जिसका लेखक 'सूरदास' जी है।

श्री कृष्ण यशोदा माता से बलराम भाई की शिकायत करते हुए कहते हैं कि भैया मुझे बलराम भैया बहुत चिढ़ाते हैं मुझे कहते हैं कि तुम को खरीदा गया है, मोल लिया गया है तुम्हें यशोदा माता ने जन्म नहीं दिया। क्या करूँ, इसी क्रोध के कारण मैं खेलने नहीं जाता।

श्री कृष्ण यशोदा माता से बलराम भाई की शिकायत करते हुए कहते भैया मुझे बलराम भैया बहुत चिढ़ाते हैं मुझे कहते हैं कि तुम को खरीदा गया है, मोल लिया गया है तुम्हें यशोदा माता ने जन्म नहीं दिया। क्या करूँ, इसी क्रोध के कारण मैं खेलने नहीं जाता।

वह बार-बार मुझसे कहते हैं कि तेरी माता कौन है, तेरे पिता कौन है तुम्हारा शरिर इयाम रंग का है। इसी कारण सब ग्वाल बाल मुझे तानें दे देकर हँसते हैं बलराम भाई ने सब यह सिखा दिया है। कृष्ण यशोदा माता से कहते हैं कि तुम तो मुझको ही मारना जानती हो बलराम भैया को कुछ भी नहीं कहती है श्री कृष्ण के मुख से यह क्रोध भरी बातें सुनकर यशोदा माता मन ही मन प्रसन्न हो जाती है। वह

कहती है हे कान्हा सुनो बलराम तो जन्म से ही चालक और चुगलखोर है। सूरदास जी कहते हैं कि यशोदा माता कहती है कि हे कृष्ण मुझे गोऊओं की सौगंध है मैं ही तुम्हारी माता हूँ और तुम मेरे पुत्र हो। इसी तरह श्री कृष्ण जी अपनी भैया बलराम जी का शिकायत अपनी माता यशोदा जी से कहता है।

४. टिप्पणी लिखिए।

१. श्री कृष्ण

शीर्षक : श्री कृष्ण

यह शीर्षक 'काव्य रंजन' संकलित पाठ्य पुस्तक के 'बाल लीला' नामक पद से लिया गया है।

श्री कृष्ण बाल लीला का मुख्य पात्र में देख सकते हैं। नन्हें नन्हें चरणों से नाचते जाते हैं और अपने-आप अपने ही चित्त को आनन्दित कर रहे हैं। कभी दोनों हाथ उठाकर 'कजरी' 'धौरी' आदि नामों से गायों को पुकारकर बुलाते हैं, कभी नन्द बाबा को पुकारते हैं और कभी आँगन से घर के भीतर चले आते हैं। अपने हाथ पर थोड़ा-सा मक्खन लेकर छोटे-से मुख में डालते हैं, कभी मणिमय खम्भे में अपना प्रतिबिम्ब देखकर उसे अन्य बालक समझकर मक्खन लेकर उसे खिलाते हैं और स्वयं भी खाते हैं। श्री कृष्ण की बाल-लीला को माता यशोदा जी छिप-छिपकर देखत भैया मुझे बलराम भैया बहुत चिढ़ाते हैं मुझे कहते हैं कि तुम को खरीदा गया है, मोल लिया गया है तुम्हें यशोदा माता ने जन्म नहीं दिया। क्या करूँ, इसी क्रोध के कारण मैं खेलने नहीं जाता।

वह बार-बार मुझसे कहते हैं कि तेरी माता कौन है, तेरे पिता कौन है तुम्हारा शरिर इयाम रंग का है। इसी कारण सब ग्वाल बाल मुझे तानें दे देकर हँसते हैं बलराम भाई ने सब यह सिखा दिया है। कृष्ण यशोदा माता से कहते हैं कि तुम तो मुझको ही मारना जानती हो बलराम भैया को कुछ भी नहीं कहती है श्री कृष्ण के मुख से यह क्रोध भरी बातें सुनकर यशोदा माता मन ही मन प्रसन्न हो जाती है।

३. रहीम के दोहे -रहीम

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।
१. रहीम जी का पूरा नाम क्या है?
रहीम का पूरा नाम अब्दुरहीम खानखाना है।
२. रहीम का लालन-पालन कौन किया?
अकबर ने रहीम का लालन-पालन किया।
३. रहीम किस का भक्त थे?
रहीम श्री कृष्ण जी का भक्त थे।
४. प्रकृति हमें क्या समझाती है?
प्रकृति हमें परोपकार का आदर्श समझाती है।
५. वृक्ष की फल किसका काम आते हैं?
वृक्ष की फल ये स्वयं नहीं खाते हैं, दूसरों के ही आम आते हैं।
६. सुजान लोग संपत्ति यों संग्रह करते हैं?
सुजान लोग दूसरों के कल्याण के लिए संपत्ति का संग्रह करते हैं।
७. चंदन के पेड़ से कौन लिपटे रहता है?
चंदन के पेड़ से संप्रप लिपटा रहता है।
८. पत्थर पर क्या पीसते हैं?
पत्थर पर मेंहदी की पत्तियाँ को पीसते हैं।
९. रहीम किसको तिरस्कार न करने के लिए कहते हैं?
रहीम बड़े लोगों को देखकर छोटे और साधारण लोगों को तिरस्कार नहीं करना चाहिए।
१०. कौन अपनी प्रशंसा नहीं करते हैं?
बड़े लोग अपनी प्रशंसा करनी चाहिए।
११. बुद्धिहीन मनुष्य किसके समान है?
बुद्धिहीन मनुष्य बिना पूँछ और बिना सींग के पशु के समान है।
१२. किस के बिना मनुष्य का अस्तित्व है?

पानी अर्थात् इजात के बिना मनुष्य का अस्तित्व व्यर्थ है।

१३. चिता किसको जलाती है?

चिता निर्जीव शरीर को जलाती है।

१४. कर्म का फल देनेवाला कौन है?

कर्म के फल देनेवाला भाग्य अथवा ईश्वर है।

१५. रहीम के अनुसार जहाँ अहं होता है, वहाँ किसका वास नहीं होता?

रहीम के अनुसार जहाँ अहं होता है, वहाँ ईश्वर का वास नहीं होता है।

१६. रहीम के अनुसार कपड़े सिलाने के लिए क्या इस्तेमाल करते हैं?

रहीम के अनुसार कपड़े सिलाने के लिए सूई को इस्तेमाल करते हैं।

१७. युद्ध के क्षेत्र में क्या काम आता है?

युद्ध के क्षेत्र में तलवार का काम आता है।

२. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

१. तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियाहि न पान।

कही रहीम दीन्ही लखै, संपत्ति सच हि सुजान।

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाद्य पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक

पद से लिया गया है। इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी हैं।

संदर्भ : रहीम जी कहते हैं कि परोपकारी महापुरुषों की प्रशंसा की है।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि प्रकृति हमें परोपकार का आदर्श समझाती आ रही

है। उसके वृक्ष, अपने फलों को स्वयं नहीं खाते वे दूसरों के ही काम आते हैं। इसी प्रकार तालाब अपना जल स्वयं नहीं पीते। उसे मनुष्य, पशु पक्षी, वृक्ष और खेतों की प्यास बुझा करती है। यही बात सज्जनों पर भी लागू होती है। वे भी केवल परोपकार के लिए संपत्ति का संचय किया करते हैं। उसके धन का लाभ दूसरे ही उठाया करते हैं।

विशेष : कवि ने परोपकारियों के स्वभाव और आचरण को सराहा है। जिसकी सम्पत्ति अभावग्रस्तों के काम आए वही सच्चा परोपकारी है और प्रशंसा का पात्र है।

२. यों रहीम सुख होत है, उपकारी के अंग ।

बांटनवारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग ।

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाद्य पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है । इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी हैं ।

संदर्भ : कवि कहते हैं कि सज्जनों का साथ अच्छा होता है तथा सज्जनों के साथ रहने वाले को इसका लाभ बिना प्रयास के ही मिल जाता है द्वितीय दोहे में कवि ने अपनी बात की रक्षा को संदेश दिया है तथा बताया है कि बात बिगड़ने के बाद लाखों प्रयत्न करके भी उसके सुधार नहीं जा सकता ।

व्याख्या : कवि कहता है कि परोपकार करने वालों के साथ रहना सदा लाभदायक होता है । साथ रहने वाले को इसका लाभ अनायास प्राप्त होता है । उसको संसार में प्रशंसा का पात्र समझा जाता है । जिस प्रकार पत्थर पर मेंहदी की पतियों को पीसने वाले के हाथ मेंहदी के रंग से बिना रचाएँ ही लाल हो जाते हैं उसी प्रकार परोपकारी का साथी थी । बिना कुछ करे प्रशंसनीय हो जाता है । कविवर रहीम लोगों को सावधान करना चाहते हैं कि उनको अपने कार्यों के प्रति सजग रहना चाहिए । यदि असावधानीवश एक बार कोइ काम बिगड़ जाता है तो लाखों प्रयत्न करने पर भी उसमें सुधार नहीं हो पाता । यदि दूध फट जाता है तो कोई उसको कितनी ही देर तक बिलोएँ उससे मक्खन नहीं मिलती ।

विशेषता :- कवि ने बताया है कि परोपकारी पुरुष का साथ करना चाहिए क्योंकि उसका लाभ निष्प्रयास मिलता है ।

३. रहिमन देखि बड़ैन को, लघु न दीजिए डारि ।

जहाँ काम आएँ सुई, कहा करै तरवारि ।।

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाद्य पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है । इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी हैं ।

संदर्भ : रहीम इस दोहे में सामाजिक सरोकार से जुड़े हैं । रहीम के विचारों से परिचित हो सकेंगे । मध्यकाल में सामाजिक सुद्धीकरण हो गया थी लोगों को एक

लक्ष्मिदिखाना आवश्यक हो गया था । इस लक्ष्य पर वह चलकर अपने सुरक्षित तथा व्यवस्थित समाज का निर्माण कर सके शायद इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर रहीम ने अपने दोहे में लिखे ।

व्याख्या : पृथ्वी पर उपलब्ध हर वह प्राणी था वस्तु किसी ना किसी उद्देश्य के लिए है, चाहे वह किसी भी प्रकार, प्रकार या अवस्था में क्यों ना हो । रहीम ने सब की महत्व को स्वीकार करते हुए सभी को उसके गुण के अनुसार स्वीकार करने की बात कही है । रहीम सामाजिक व्यक्ति थे इसलिए इस महत्व को अपने समाज से जोड़कर अपनी बातों को कहा ।

तलवार और सूई का उदाहरण देकर सिद्ध किया कि दोनों को अपनी जगह महत्व है । कपड़े मिलने के लिए जहाँ सूई काम आती है । तलवार नहीं, वही युद्ध क्षेत्र में तलवार काम आत है सूई नहीं । अर्थात् दोनों की उपयोगिता अपनी-अपनी जगह है इसलिए समाज के हर वर्ग को महत्व दिया जाना चाहिए । कोई छोटा था बड़ा नहीं बालिका आवश्यकता अनुरूप सभी उचित है और सभी स्वीकार्य है ।

विशेष : कवि अपने लेखनी के माध्यम से समाज को जोड़ने का प्रयास किया है । उन्होंने सभी को स्वीकार करने पर बल दिया है । जैसा कि आप जानते लेखनी से जितना सफल प्रयास क धरती थे उन्होंने लेखनी से जितना सफल प्रयास किया उतना ही उन्होंने तलवार से भी सफल शासन किया ।

४. कह रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।

विपति कसौटी जे कसे, सोई सांचे भीत ।।

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाद्य पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है । इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी हैं ।

संदर्भ : रहीम जी कहते हैं कि सच्चे मित्र की पहचाना बताया है । इस दोहे से सुदामा चरित की समानता दिखती है ।

व्याख्या: इस दोहे में रहीम जी कहता है कि जब मनुष्य के पास धन-संपत्ति होती है तो बहुत से लोग उसके मित्र बन जाता है, लेकिन जो मुश्किल समय के साथ देते हैं वही सच्चे मित्र कहलाते हैं।

सुदामा चरित के अनुरूप यह दोहा पूर्णतया सही है क्योंकि कृष्ण व सुदामा बचपन के मित्र तो थे। लेकिन बड़ा होकर कृष्ण द्वारिका धिया बने और सुदाम गरीब के गरीब ही रहे। एक बार पत्नी के आग्रह करने पर कि आप अपने मित्र कृष्ण के पास जाओ वे अवश्य हमारी सहायता करेंगे। सुदामा जब कृष्ण के पास जाते हैं तो वे उसे सर-आँखों पर बिठाते हैं। उनका आदर सत्कार कर उसकी दीन दशा हेतु व्यथित हो उठते हैं। जब सुदामा वापिस घर जाते हैं तो मार्ग में सोचते हैं कि कृष्ण के पास आना व्यर्थ रहा। उन्होंने कुछ भी सहायता नहीं ली। लेकिन जब अपने गाँव पहुँचते हैं तो देखकर हैरान हो जाते हैं कि उनके गजसी ठाट-बाट बन चुके हैं। मन-ही-मन कृष्ण के प्रति कृतज्ञ हो जाते हैं कि प्रत्यक्ष रूप से कुछ देकर उन्होंने मित्रता को छोटा नहीं किया।

विशेष : सच्चा मित्र कौन है? वही, जो समय वह अवश्यकता पड़ने पर काम आए, सुख के तो कई साथी होते हैं, किन्तु सच्चा साथी दुख का साथी होता है।

५. रहिमान धागा प्रेम का, मत लोओ चटक्कई।

टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ पड़ ज़ब्त।।

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाठ पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है। इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी है।

संदर्भ : रहीम कहान चाहता है कि हमें प्रेम के संबंध नहीं तोड़ना चाहिए, क्यों कि एक बार ऐसा होने पर वह प्रेम पहले जैसा नहीं रह जाता और एक प्रकार कड़वाहट रिश्ते में आ जाती है।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि जिस प्रकार से कोई धागा तोड़ने पर हो जाता है जैसे ही एक प्रेम संबंध वाला रिश्ते कि सी दशा हो जाती है। अगर आप उस धागे को दोबारा जोड़ने प्रयास करें तो एक गाँठ पड़ जाती है, वैसे ही अगर आप प्रेम संबंध

वाले रिश्ते को जोड़ने का प्रयास करे तो वह जुड़े तो जाएगा परंतु उसमें वह पटली वाली मिठास नहीं रह जाएगी और ना ही पहले वाला प्रेम रह जाएगा।

रहीम का कहना है कि हमें इसलिए ऐसे संबंध जो नहीं तोड़ना चाहिए। जिसमें अत्यंत प्रेम हो तथा एक दूसरे के लिए कुछ अच्छा करने की भावना हो। आज के जमाने में ऐसे रिश्ते बहुत मुश्किल से मिलते हैं और बनने हैं। किसी भी प्रेम संबंध को स्थापित होने में काफी वर्षा लगते हैं जिसमें आप दोनों एक दूसरे को ऊपर इस तरीके से आश्रित हो जाते हैं जैसे कि आपको उनको छोड़कर दुनिया में किसी को ऊपर भरोसा नहीं। यहाँ पर ऐसे ही प्रेम संबंध की बात हो गई है जिसके टूटने पर दोनों ही पक्ष के लोगों को पीड़ा होती है।

विशेष : प्रेम संबंध का क्या महत्व होता है और इसे क्यों नहीं तोड़ना चाहिए।

६. कदली, सीप, भुजंग मुख स्वाति एक गुन तीन।

जैसी संगति बैठिए, तैसी फल दीन।

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाठ पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है। इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी है।

संदर्भ : कवि कहता है कि कोई व्यक्ति या वस्तु पर अच्छा और बुरा प्रभाव के बारे में कहता है।

व्याख्या : अच्छी और बुरी संगति का व्यक्ति और वस्तु पर अच्छा और बुरा प्रभाव देखने में आता है। व्यक्ति नक्षत्र के समय में गिरने वाली बादल के जल की बूंद जब केले पर गिरती है तो कपूर बन जाती है, सीपी में जा गिरती है तो मोती बन जाती है। वही बूंद जब सर्प के मुख में गिरती है तो प्राणघातक विष बन जाती है। स्पष्ट है कि मनुष्य जैसी संगति करेगा। उस बैसा ही [अच्छा या बुरा] फल प्राप्त होगा। कवि रहीम कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति धन संपन्न रहीम कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति धन संपन्न होता है तो बहुत से अपरीक्षित लोग भी अनेक उपायों से उसके सगे संबंधी बन जाया करते हैं। परन्तु सगेपन और मित्रता की सच्ची परीक्षा तो संकट

और आने पर होती है। संकट के समय जो मनुष्य को सच्चे मन के साथ देत है वही उसका सच्चा मित्र होता है। स्वामी मित्र तो सुख के साथी होते हैं, बुरे दिन आते ही किन आरा कर जाते हैं।

विशेष : मनुष्य को सदा अच्छे लोगों की संगति करनी चाहिए। कुसंग का बुरा फल मिलना अवस्थाभावी है। कवि ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है।

७. रहिमन कठिन चिन्ताहु ते, चिन्ता कर चित चेत।

चिन्ता दहित निर्जीव कहाँ, चिन्ता जीव समेत ॥

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाथ पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है। इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी हैं।

संदर्भ : रहीम कहते हैं कि कठोर चिन्ताओं से अपने को मुक्त कर पाने चित पर अनियंत्रण करे क्योंकि निता तो प्रणाहीन प्राणी को जलाकर राख कर देती है परंतु चिन्ता तो चिन्ता प्राणी को ही जलाकर भस्म कर देती है।

व्याख्या : चिन्ता के समान मनुष्य का कोई दूसरा शत्रु नहीं है। इसका कारण यह है कि सामान्य मनुष्य अपने के ओर कर्तृपन के अहंकार से स्वयं को मुक्त नहीं करता। इसलिए अपने सांसारिक कार्य के बनने पर प्रसन्न होता है तो बिगड़ने पर भारी संतप का शिकार बन जाता है। सच बात तो यह है कि आदमी अकेली आया है और अकेला ही उसे जाना है इस तथ्य को जानते हुए भी लोग भूल जाते हैं। अपने परिवार तथा समाज को अपने कर्म पर ही आधारित मानना मनुष्य का एक ऐसा भ्रम है जिससे अगर वह मुक्त हो जाये तो फिर कहना ही क्या? हमने देखा होगा कि जीवन नश्वर है और जब इस संसार को छोड़ जाता है उसके साथ उसका कोई आश्रित नहीं जाता है। दो चार दिन रोकर सभी अपने काम में लग जाते हैं। सब देखते हुए भी सामान्य मनुष्य आँख बंद कर अपने को विश्वास दिलाता है कि वही अपने संसार की नाव का खेवनहार है और इसी चिन्ता में अपनी पूरी जिंदगी गुजार देता है।

विशेष : जीवन सहज भाव से जीने और समाज में समरसता का भाव बनाये रखने के लिए और समाज में समरसता का भाव बनाये रखने के लिए यह अवश्यक है कि चिन्ता और अहंकार के भाष से मुक्त रहा जाये।

८. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चंदन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग ॥

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाथ पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है। इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी हैं।

संदर्भ : कवि कहता है कि साँप का विष कहा भी रहने के वक्त विष होता है, इसी तरह चंदन को कहा भी रहने के वक्त उनका सुगंध नहीं जाता है।

व्याख्या : रहीम कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार चंदन के वृक्ष में साँप लिपटे हुए होते हैं और तब भी चंदन में विष नहीं पाया जाता उसी प्रकार जिस व्यक्ति का चरित्र अच्छा होता है एवं जो व्यक्ति अंदर से मजबूत है उसे गलत संगति भी नहीं बिगाड़ सकती।

चंदन साँप जैसे विषैल साँपों से लिपटे होने के बावजूद भी अच्छी खुशबू प्रदान करता है तथा चंदन का प्रयोग बहुत से शुभ कामों में किया जाता है। इसी प्रकार से एक अच्छे प्रकृति का व्यक्ति भी बुरे लोगों से घिरे रहने के बावजूद भी पवित्र रहता है। उस व्यक्ति का उसी प्रकार से सम्मान किया जाता है जिस प्रकार से चंदन का किया जाता है।

विशेष : रहीम जी इस दोहे में कहते हैं कि ध्यान से पढ़ेंगे तथा अंदर तक सोचने का प्रयास करेंगे तो आपको समझ में आएगा कि हर बार हमें बाहर के लोगों को बदलने कि जरूरत नहीं होती बल्कि खुद को बदलने की होती है। अगर हम अपने आप को अंदर से बदल ले तो हम पर बाहर के लोगों का प्रभाव नहीं होगा एवं हम समाज के लिए कुछ अच्छा का पाएंगे।

९. रहीमन निज मन की व्यथा, मन ही गखी गोय ।

सुनि अठलही लोग सब, बाँटी न लैही कोय ।

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाद्य पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है । इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी है ।

संदर्भ : यह सच है कि क्या वही होता है, जो दुख दर्द में काम आता है । यह भी कहा जाता है कि आपने दुख दर्द बाँटने से उसकी पीड़ा कम हो जाती है । पर अपना कौन है, किसे दोस्त माना जाए, इसकी क्या कसौटी है ।

व्याख्या: कवि कहते हैं कि लगे दूसरों को अपना दुख दर्द सुनाते हैं । लेकिन सुनने वाले सामने तो सहानुभूति का प्रदर्शन करते हैं । किन्तु पीठ पीछे उसका परिहास करते हैं । ऐसी स्थिति को देखते हुए रहीम कहते हैं, मन में जोहे कितनी ही पीड़ा क्यों न हो, उसे किसी को सुनाने की आवश्यकता नहीं । बेहतर यही है कि मन की व्यथा मन में ही छिपाकर रखो । सुनाने को कोई लाभ नहीं होगा । अगर किसी को अपनी सुनाएँगे भी तो पीठ पीछे वह आपका मजाक उड़ाएँगे । इसमें से कोई भी ऐसा नहीं है, जो पीड़ा का 'बाँटने वाला हिस्सा' धैर्यमाना होकर पीड़ा को सहने की शक्ति अर्जित करे ।

विशेष : अपने मन के दुख को मन के भीतर छिपाकर ही रखना चाहिए । दूसरे का दुख सुनकर लोग इठला भले ही लें, उसे बाँट कर काम करने वाला कोई नहीं होता ।

१०. बिगरी बात बनी नहि, लाख कये किन कोय ।

रहिमन फाट दूध को, मथे न माखन होय ॥

प्रसंग : यह पद 'काव्य रंजन' नामक पाद्य पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है । इसकी रचयिता 'रहीमदास' जी है ।

संदर्भ : मनुष्य को सोचसमझ कर व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि किसी कारणवश यदि बात बिगड़ जाती है, तो फिर उसे बनाना कठिन होता है, जैसे यदि एक बार दूध फट गया तो लाख कोशिश करने पर भी उसे मध कर मक्खन नहीं निकाला रहीम कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार चंदन के वृक्ष में साँप लिपट हुए होते हैं और तब भी चंदन में बिष नहीं पाया जाता उसी प्रकार जिस व्यक्ति का चरित्र अच्छा होता है एवं जो व्यक्ति अंदर से मजबूत है उसे गलत संगति भी नहीं बिगाड़ सकती ।

चंदन साँप जैसे विषैल साँपों से लिपटे होने के बावजूद भी अच्छी खुशबू प्रदान करता है तथा चंदन का प्रयोग बहुत से शुभ कामों में किया जाता है । इसी प्रकार... से एक अच्छे प्रकृति का व्यक्ति भी बुरे लोगों से घिरे रहने के बावजूद भी पवित्र रहता है । उस व्यक्ति का उसी प्रकार से सम्मान किया जाता है जिस प्रकार से चंदन का किया जाता है ।

विशेष: रहीम जी इस दोहे में कहते हैं कि ध्यान से पढ़ेंगे तथा अंदर तक सोचने का प्रयास करेंगे तो आपको समझ में आएगा कि हर बार हमें बाहर के लोगों को बदलने कि जरूरत नहीं होती बल्कि खुद को बदलने की होती है । अगर हम अपने आप को अंदर से बदल ले तो हम पर बाहर के लोगों का प्रभाव नहीं होगा एवं हम समाज के लिए कुछ अच्छा का पाएँगे ।

३. प्रश्नों का उत्तर लिखिए ।

१. रहीम के दोहे के अनुसार कोई भी व्यक्ति को रंग देखकर भिन्नता काना नहीं है, इसके आधार पर सुई और तलवार के बारे में अपने वाक्य में लिखिए ।

यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है । जिसका लेखक 'रहीम' जी है ।

रहीम जी ने इस दोहे में सामाजिक संस्कार से जुड़े हैं । रहीम के विचारों से परिचित हो सकेंगे । मध्यकाल में सामाजिक सुदृष्टीकरण हो गया थी लोगों को एक

लक्ष्मिदिखाना आवश्यक हो गया था। इस लक्ष्य पर वह चलकर अपने सुरक्षित तथा व्यवस्थित समाज का निर्माण कर सके शायद इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर रहीम ने अपने दोहे में लिखे।

पृथ्वी पर उपलब्ध हर वह प्राणी था वस्तु किसी ना किसी उद्देश्य के लिए है, चाहे वह किसी भी अकार, प्रकार या अवस्था में क्यों ना हो। रहीम ने सब की महत्व को स्वीकार करते हुए सभी को उसके गुण के अनुसार स्वीकार करने की बात कही है। रहीम सामाजिक व्यक्ति थे इसलिए इस महत्व को अपने समाज से जोड़कर अपनी बातों को कहा।

रहीम जी ने इस शीर्षक के अनुसार तलवार और सूई का उदाहरण देकर सिद्ध किया कि दोनों को अपनी जगह महत्व है। कपड़े मिलने के लिए जहाँ सूई काम आती है। तलवार नहीं, वही युद्ध क्षेत्र में तलवार काम आत है सूई नहीं। अर्थात दोनों की उपयोगिता अपनी-अपनी जगह है इसलिए समाज के हर वर्ग को महत्व दिया जाना चाहिए। कोई छोटा था बड़ा नहीं बालिका आवश्यकता अनुरूप सभी उचित है और सभी स्वीकार्य है।

कवि अपने लेखनी के माध्यम से समाज को जोड़ने का प्रयास किया है। उन्होंने सभी को स्वीकार करने पर बल दिया है। जैसा कि आप जानते लेखनी से जितना सफल प्रयास क धरती थे उन्होंने लेखनी से जितना सफल प्रयास किया उतना ही उन्होंने तलवार से भी सफल शासन किया।

२. रहीम के अनुसार कोई व्यक्ति का प्रेम संबंध तोड़ने वक्त उनका फिर से जोड़ने के बात कैसे होता है रहीम के दोहे के आधार पर लिखिए।

यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'रहीम के दोहे' नामक पद से लिया गया है। जिसका लेखक 'रहीम' जी है।

रहीम कहाना चाहता है कि हमें प्रेम के संबंध नहीं तोड़ना चाहिए क्यों कि एक बार ऐसा होने पर वह प्रेम पहले जैसा नहीं रह जाता और एक प्रकार कड़वाहट रिश्ते

में आ जाती है। कवि कहते हैं कि जिस प्रकार से कोई धागा तोड़ने पर हो जाता है जैसे ही एक प्रेम संबंध वाले रिश्ते कि धी दशा हो जाती है। अगर आप उस धागे को दोबार जोड़ने प्रयास करें तो एक गाँठ पड़ जाती है, वैसे ही अगर आप प्रेम संबंध वाले रिश्ते को जोड़ने का प्रयास करें तो वह जुड़े तो जाएगा परंतु उसमें वह पहली वाली मिठास नहीं रह जाएगी और ना ही पहले वाला प्रेम रह जाएगा।

रहीम का कहना है कि हमें इसलिए ऐसे संबंध को नहीं तोड़ना चाहिए। जिसमें अत्यंत प्रेम हो तथा एक दूसरे के लिए कुछ अच्छा करने की भावना हो। आज के जमाने में ऐसे रिश्ते बहुत मुश्किल से मिलते हैं और बनते हैं। किसी भी प्रेम संबंध को स्थापित होने में काफी वर्ष लगते हैं जिसमें आप दोनों एक दूसरे को ऊपर इस तरीके से आश्रित हो जाते हैं जैसे कि आपको उनको छोड़कर दुनिया में किसी को ऊपर भरोसा नहीं। यहाँ पर ऐसे ही प्रेम संबंध की बात हो गई है जिसके टूटने पर दोनों ही पक्ष के लोगों को पीड़ा होती है।

४. यह धरती कितना देती है

-सुमित्रानंदन पंत

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

१. यह धरती कितना देती है? कविता का कवि कौन है?

यह धरती कितना देती है? कविअता का कवि सुमित्रानंदन पंत जी है।

२. कवि किस बीज को छिपाकर बोने के लिए कहा?

पैसे की बीज को छिपाकर बोने के लिए कहा।

३. पैसे के फसल में क्या मिलता है?

पैसे के फसल में बहुत सारी पैसा मिलता है।

४. पैसे के फसल में हम क्या बनाते हैं?

पैसे के फसल में हम लोग मोटा सेठ बनसकते हैं।

५. कौन सा गलत बीज बोए थे?

पैसे की गलत बीज बोए थे।

६. पैसे का बीज बोने को कहा देखा था?

पैसे का बीज बोने को सपने में देखा था।

७. पैसे का बीज कहा बोए थे?

एक बंजर धरती में पैसे का बीज बोए थे।

८. गलत बीज डालकर/पैसों की बीज कि घटना से कितने वर्ष बीत गया?

जीवन के पचास वर्ष बीत गया।

९. बचपन का घटना बितने के लिए कितना वर्ष हुआ?

पचास वर्ष बीत गया।

१०. कवि ने गीली मिट्टि में क्या डाला था?

कवि ने गीली मिट्टि में सेम का बीज डाला था।

११. सेम का बीज कैसे बाहर आया/ सेम का बीज बाहर आने का वर्णन कीजिए।

।

सेम का बीज बाहर आने के वक्त चिड़िया अंडे फोड़कर बाहर निकलने का वर्णन किया है।

१२. सेम का बीज को किससे तुलना करते हैं?

सेम का बीज को चिड़िया अंडे से बाहर आने वाला को तुलना किया था।

१३. सेम को किस-किस को दिये थे?

पड़ोस, जान-पहचान वाले, मित्र अन्य लोगों को दे दिया था।

१४. परिश्रम से काम करने से क्या मिलता है?

परिश्रम से काम करने से अच्छा फल मिलता है।

२. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

१. मैंने छुटपन में पैसे बोए थे,

सोचा था, पैसे के प्यारे पेड़ उगेंगे,

रपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी

और फूल फूलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा।

पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूट,

बन्धा मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला

सपने जाने कहाँ भिटे, कब धूल हो गये

मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक

बाल कल्पना के अपलक पाँवों बिछाकर

मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोए थे

ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन पाठ पुस्तक के 'यह धरती कितना देती है' पद्य से लिया गया है। इस की लेखिका 'सुमित्रानंदन पंत' जी है।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने धरती की उपजाऊ शक्ति के बारे में बताया है कि जिस प्रकार धरती में जो बोया जाए वही प्राप्त होता है इसी प्रकार हम जो कर्म करते हैं हमें वैसा ही फल मिलता है ।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि मैंने बचपन में छिपकर धरती में कुछ पैसे बो दिए थे, यह सोचकर कि इससे पैसों के पेड़ उग आइंगे और रूपयों पैसों से भरी फसलें खनकेंगी और मैं धनवान सेठ बन जाऊंगा परंतु बंजर धरती में एक भी बीज नहीं फूटा जो सपने में देखे थे वह सब मिट्टी हो गए और मैं परेशान होकर कई दिनों तक प्रतीक्षा करता रहा कि अब पैसों के पेड़ उमंगे कि अब ! बचपन की कल्पना में मैं अपने पलकों रूपी पाँव बिछाकर अनजान बालक यह नहीं जानता था कि मैंने गलत बीज बोए हैं ।

विशेषता : इस कविता में कवि ने मिट्टी गुण के बारे में कहना ।

२. अर्धशती हहरती निकल गई है तब से!

कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने
ग्रीष्म तपें, वर्षा झुली, सरदे मुसकाई,
सी-सी कर हेमंत कँपे, तरु झरे, खिले वन
औ जब फिर से गाढ़ी ऊंदी लालसा लिए
गहरे कजारे बदल बरस धरती पर
मैंने कौतूहलवश आँगन के सहलाकर
बीज सेम के दबा दिए मिट्टी के नीचे
भू के अंचल में मणि-गणिक बाँध दिए हों ॥

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन' पाठ पुस्तक के "यह धरती कितना देती है" पद्य से लिया गया है । इस की लेखिका "सुमित्रानंदन पंत" जी है ।

संदर्भ : कवि ने बचपन में अज्ञानवश भूमि में पैसों के बीज बोये थे । वे अंकुरित नहीं हुए । कवि इस घटना को भूला गया । तब से इसके जीवन के पचास वर्ष बीत गए । अनेक ऋतुएँ आई और चली गईं ।

व्याख्या : कवि कहता है कि बचपन की उस घटना को हुए जीवन के पचास वर्ष बीत गए हैं । अनेक बार ग्रीष्म ऋतु में खूब गर्मी पड़ी है । वर्ष ऋतु भी अनेक बार आई और पेड़-पौधे, फूल-फले हैं । वर्ष ऋतु के उपरांत शरद का हल्का-फूल्का ठंडा मौसम आया गया है । हेमन्त ऋतु भी अनेक बार आई-गई है । जब तेज सर्दी के कारण मुँह से 'सी-सी' की आवाजें निकलती हैं । हेमन्त ऋतु भी अनेक बार आई और शरीर बर्फीली ठंड से काँप उठा था । इस प्रकार अनजाने ही पिछले पचास वर्ष बीत गई । कवि ने जिज्ञासापूर्वक अपने आँगन की गीली मिट्टी को उगेली से कुरेदा और उसके नीचे सेम बीज दबा दिए । उन बीजों के रूप में उसने धरती के आँचल में मूल्यवान रत्न में उसने धरती के आँचल में मूल्यवान रत्न बाँध दिए थे ।

विशेष : कवि ने वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद तथा हेमन्त ऋतुओं का सुन्दर चित्रण किया है ।

३. मैं फिर भूल गया इस छोटी सी घटना को

और बात भी क्या थी, याद जिसे रखता मन
किन्तु एक दिन जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था, तब सहसा मैंने जो देखा
उससे हर्ष-विमूढ़ हो उठा, मैं विस्मय से
देखा, आँगन के कोने में कई नवागत
छोटा-छोटा छाता ताने खड़े हुए हैं ।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन' पाठ पुस्तक के "यह धरती कितना देती है" पद्य से लिया गया है । इस की लेखिका "सुमित्रानंदन पंत" जी है ।

संदर्भ : कवि ने बरसात में अपने घर के आँगने की गीली मिट्टी में सेम के दबादिये थे । इसके बाद उसको इसके बारे में कुछ याद नहीं रहा ।

व्याख्या : पंतजी कहते हैं कि वह यह भूल गया कि उन्होंने अपने घर के आँगन में सेम को बीज बो दिए थे । घटना बहुत मामूली थी तथा इसमें स्मरण रखने योग्य कोई बात नहीं थी ।

एक दिन शाम के समय वह आँगन में टहल रहे थे। अचानक उन्होंने जो देखा उससे वह अत्यधिक प्रसन्न हुए, सुध-बुध खा बैठे तथा आश्चर्य चकित हो उठे, उन्होंने देखा कि आँगन में अनेक नए छोटे पौधे उग आए हैं। वे पौधे उनके छोटे-छोटे छाते लगाए हुए आगन्तुकों के समान प्रतीत हुए। कवि उनको छाते अथवा विजय की घोषण करने वाले झण्डे भी कह सकते थे अथवा इन्होंने अपनी छोटी-छोटी प्यारी हथेलिया फैला रखी थी। कुछ भी कहें किन्तु वे हरे-भरे तथा प्रसन्नता से भरे पौधे चिड़ियों के अंडे फोड़कर बाहर निकले और उड़ने के लिए उत्सुक बच्चों जैसे प्रतीत हो रहे थे।

विशेष : पैसे तो नहीं उगे किन्तु सेम के बीज उग आए। कवि बताना चाहता है कि सही ढंग से प्रयत्न करने पर ही सफलता मिलती है।

४. छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की
या हथेलियाँ झोले थे वे नन्हीं, प्यारी-
जो भी हो, वे हरे-हरे उल्लास से भरे,
पंख मार कर उड़ने को उत्सुक लगते थे,
हिब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चों से
निनिमेष क्षण भर मैं उसको रहा देखता
सहसा मुझे स्मरण हो आया-कुछ दिन पहले
बीज सेम के गोपे थे मैंने आँगन में
और उन्हीं से बीने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से
नहें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन पाठ पुस्तक के 'यह धरती कितना देती है' पद्य से लिया गया है। इस की लेखिका 'सुमित्रानंदन पंत' जी है।

संदर्भ : प्रस्तुत कविता में कवि ने मन की भावों एवं प्रकृति के सुन्दर रूप का वर्णन किया है।

व्याख्या : कवि कहता है कि उन सेम की बीजों से जब पौधे उग जाए तो वह ऐसे प्रतिष्ठित हो रहे थे, जैसे छाता के लिए खड़े हो या विजय की झण्डियाँ उठाए खड़े हो। ऐसा लगता था मानों वह हथेलियाँ खोले थे, नन्हीं सी, प्यारी सी। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वो आनन्द से भरे हो और पंख मारकर उड़ने को तैयार हो, वह ऐसे लगते थे जैसे चिड़िया के बच्चे अण्डे तोड़कर बाहर निकलते हैं उसी प्रकार वह हरे-भरे बाहर निकले सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। पलभर मैं उनको एक टुक (बिना पलके झपकाए) देखता रहा। अचानक मुझे याद आ गया कि कुछ दिन पहले तो मैंने सेम कए बीज बोए थे यह तो पौधों से सोना उन्हीं बीजों से निकली है जो मेरी आँखों के सामने गर्व से खड़ी हैं जो रही है भाव उन पौधों को देखकर कवि के मन में बड़ी प्रसन्नता का भाव था।

विशेष : चिड़ियों की बच्चे अण्डे तोड़कर बाहर निकलने का वर्णन करना।

५. तब से उनको रहा देखता धीरे-धीरे
अनगिनत पत्तों से लद भर गई झाड़ियाँ
हरे-भरे टँग गए कई मखमली चूँदोबे?
बलें फैल गई बल खा, आँगन में लहलहा-
और सहाय लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे-हरे सो झरने फूट पड़े ऊपर को
मैं अबका रह गया बंश कैसे बढ़ता है।
छोटे लानो-से छितरे, फूलों के छीने
झागो-से लिपटे लहरी शयमल लतारों पर
सुन्दर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से
चोटी के मोती से आँचल के बूटों-से

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन पाठ पुस्तक के 'यह धरती कितना देती है' पद्य से लिया गया है। इस की लेखिका 'सुमित्रानंदन पंत' जी है।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या :- कवि कहते हैं कि मैं उन सेम के बीजों की लताओं को देखता रहा धीरे-धीरे वह अग्नित पत्तों से लद गए और झाड़ियों से भर गए और उस पर कई मखमली हरी-भरी शमियाने टँग गए मानों तारों से ताना हो। तब आँगन में लहराकर बल आकर कई बेलें फैलने लगी। वह बाड़े की फट्टियों की दीवार के सहारे से बड़ने। ऐसा प्रतीत होता था मनो हर-हरे सौ झरने फूट पड़े हों। मैं हैशान होकर खड़ा लगी। सोचता रहा है कि यह वंश कैसे बढ़ता जा रहा है मानों तारों से छिआरे और फूलों के छीटे हों वह मोतियों के समान चमक रही हो भाव प्रकृति किस प्रकार विकसित एवं पलवित होती है किस प्रकार सुन्दरता को ग्रहण करती है यह देखकर कवि आश्चर्यचकित था।

६. ओह, समय पर इनमें कितनी फलियाँ टूटी

कितनी सारी फलियाँ कि तनी प्यारी फलियाँ

पतली चौड़ी फलियाँ —ऊफ़ उसकी क्या गिनती

लंबी-लंबीअंगुलियों सी, नन्ही नन्ही

तलवारों सी, पन्ने के प्यारे हारों सी

झूठ न समझे, चन्द्र कलाओ से नित बढ़ती

सचें मोती की लडियों—सी ढेर-ढेर खिल

झुण्ड-झुण्ड झिलमिलकर कचपच्चिया तारों—सी ॥

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन पाद्य पुस्तक के “यह धरती कितना देती है” पद्य से लिया गया है। इस की लेखिका “सुमित्रानंदन पंत” जी है।

संदर्भ : प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति के इकसित होने के रूप का वर्ण किया है कि धरती तो देने वाली है।

व्याख्या :- कवि कहते हैं कि कुछ समय पर उसमें कई कलियाँ उग आई, कितनी सारी फलियाँ उस पर लगी तब कवि को महसूस हुआ कि धरती माता तो कितना देती है। लंबी-लंबी अंगुलियों से और नन्ही नन्ही तलवारों से ये सभी मोती जैसे कड़ियों में बहुत सारी खिल गया, ये सभी पन्ने के हारों जैसे झुण्ड-झुण्ड झिलमिलकर तारों जैसे दिखता है।

विशेषता :- कवि ने उस सेम की कलियाँ और फलियों को मोती और तारों से अलंकृत करते हुए वर्णन किया है।

७. आ इतई फलियाँ टूटी, जाड़ों भर खाई
सुबह शाम वे घर भर में पकी, पड़ोस पास के
जाने-अनजाने सब लोगों में बँटवाई
बँधु-बांधवों, मित्रों, अभ्यागत, मँगतो ने,
जी भर भर दिन-रात मुहल्ले भर ने खाई
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ ॥

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन पाद्य पुस्तक के “यह धरती कितना देती है” पद्य से लिया गया है। इस की लेखिका “सुमित्रानंदन पंत” जी है।

संदर्भ : प्रस्तुत कविता में कवि ने सेम की कलियाँ में कितना फलियाँ टूटा तो ये सभी जाड़ों भर खाई सुबह-शाम सभी घरों पकी और पड़ोस, आस-पास के लोग और जान-पहचान वालों को, बँधु-बांधवों, मित्रों, और मेहमान के घर आने वाले अन्य लोग और पूरे लोगों के घर में दिन-रात मुहल्ले भर खाई ये कलियाँ बहुत सारी प्यारी फलियाँ तो देखकर कवि बहुत खुश होता है।

विशेषता:- कवि ने सेम की कलियाँ और फलियों का वर्णन किया है।

८. यह धरती कितना देती है ! धरती माता ।
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को
बचपन में, छिः स्वर्ध लोभवश पैसे बोक
रन प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ ।
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन' पाद्य पुस्तक के "यह धरती कितना देती है" पद्य से लिया गया है। इस की लेखिका "सुमित्रानंदन पंत" जी है।

संदर्भ : प्रस्तुत कविता में कवि ने कहता है कि यह धरती तो कितना देता है। यह धरती माता ने कितना देती अपने प्यारे पुत्रों को हमें उनकी बारे में नहीं समझ पाये कि उनकी ममता को हम तो बचपन में बहुत स्वार्थ थे, लोभ में पड़कर पैसे का बीज बोए थे। अभी मलूम हुआ कि ये सभी हम पैसे का बीज से नहीं हम कौन सा बिज बोए है उनको सही तरह से उनका पालन-पोषण किया तो उस वसुधा ने रत्न जैसे सच्ची ममता दान के तरफ देती है।

व्याख्या :- कवि ने पौधे, को, रत्न, के, समान, वर्णन, किया है।

१. इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं

इसमें मानव-ममता के दानो बोने हैं,

जिसरो उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें

मानवता की-जीवन श्रम से हैंसे दिखाएँ

हम जैसा बोएँगे, वैसा ही पाएँगे।।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन' पाद्य पुस्तक के "यह धरती कितना देती है" पद्य से लिया गया है। इस की लेखिका "सुमित्रानंदन पंत" जी है।

संदर्भ : प्रस्तुत कविता में कवि ने कहता है कि हम कैसे काम करते हैं वैसे ही हमें उसका फल मिलता है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि कोई भी परिश्रम करके करने वाले काम में फल तो मिलता है। इस लिए इसमें जान की क्षमता के दानों को बोना पड़ता है। इसमें तो मानव की ममता से उस बीज को बोने से या हम कैसे उस बीज को डालते हैं और उनको हम किस तरीके से उनको देखते हैं उसी तरह हमें फसल भी हमें मिलता है। इसलिए मानवता कि जीवन में श्रम से हम काम करने उस फसल को देखकर हमारे जीवन सुख भय हो जाता है। कवि कहत है कि हम जैसा बोएँगे, वैसा ही पाएँगे।

विशेषता :- कवि परिश्रम का वर्णन करता है।

३. "यह धरती कितना देती है" कविता में अपनी आंगन में आने वाले सेम की पौधे को कैसे वर्णन किया है, अपने वाक्यों में लिखिए।

प्रस्तुत पंक्ति काव्य रंजन' पाद्य पुस्तक के "यह धरती कितना देती है" पद्य से लिया गया है। इस की लेखिका "सुमित्रानंदन पंत" जी है।

कवि ने बरसात में अपने घर के आंगन की गीली मिट्टी में सेम के बीज को दबादिये थे। इसके बाद उसको इसके बारे में कुछ याद नहीं रहा। वह यह भूल गया कि उन्होंने अपने घर के आंगन में सेम को बीज बो दिए थे। घटना बहुत मामूली थी तथा इसमें स्मरण रखने योग्य कोई बात नहीं थी।

एक दिन शाम के समय वह आंगन में टहल रहे थे। अचानक उन्होंने जो देखा उससे वह अत्यधिक प्रसन्न हुए, सुध-बुध खो बैठे तथा आश्चर्य चकित हो उठे, उन्होंने देखा कि आंगन में अनेक नए छोटे पौधे उग आए हैं। वे पौधे उनके छोटे-छोटे छाते लगाए हुए आगन्तुकों के समान प्रतीत हुए। कवि उनको छाते अथवा विजय की घोषण करने वाले झण्डे भी कह सकते थे अथवा इन्होंने अपनी छोटी-छोटी प्यारी हथेलिया फैला रखी थी। कुछ भी कहें किन्तु वे हरे-भरे तथा प्रसन्नता से भरे पौधे चिड़ियों के अंडे फोड़कर बाहर निकले और उड़ने के लिए उत्सुक बच्चों जैसे प्रतीत हो रहे थे।

कवि ने सोचा था कि पहले पैसे तो नहीं उगे किन्तु सेम के बीज उग आए। कवि बताना चाहता है कि सही ढंग से प्रयत्न करने पर कोई भी काम से हमें सफलता मिलती है।

५. फूल और काँटा

-अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

* सारांश

फूल पुर काँटा नामक कविता में कवि ने फूल और काँटा का तुलनात्मक वर्णन करते हुए स्वभाव में भिन्नता प्रकट की है। इसके अनुसार फूल और काँटा एक स्थान से उत्पन्न होते हैं तथा बढ़ते हैं। एक जैसी हवा, बारिश, धूप उनको लगती है फिर भी दोनों की स्वभाव बहुत भिन्न है। एक अपनी बुगई दिखाता है तथा दूसरा अपनी अच्छाई प्रकट करता है।

काँटा सबके हाठों को छेदत है, वस्त्र फाड़ता है, तितलियों तथा भँवरों के शरीर को नोधता है परन्तु फूल सब को अपनी महक तथा सुमन्धि से प्रसन्न करता है। कवि यह कहना चाहता है कि अच्छे कुल में जन्म लेने का क्या लाभ अगर अपने आप में बड़प्पन नहीं है। अपने गुणों के कारण ही कोई सम्मान प्राप्त करता है, परिवार के कारण नहीं।

१. एक वक्य में उत्तर लिखिए।

१. 'फूल और काँटा' कविता का कवि कौन है?
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी हैं।
२. फूल और काँटे में कवि किसका चित्रण किया था ?
फूल और काँटे का परस्पर-विरोधी स्वभाव का चित्रण किया है।
३. फूल और काँटे पर क्या चमकता है?
चन्द्रामा जैसी चाँदनी चमकता है।
४. फूल और काँटे पर क्या समान रूप से मिलता है?
एक-जैसी बारिश और हवा समान रूप से मिलता है।
५. काँटा हाथ लगने पर क्या होता है?
काँटा हाथ पर लगने पर अंगुली में चुभ जाता है।
६. काँटे से क्या फाड़ देता है?
काँटे से किसी सुन्दर कपड़ा फाड़ देता है।
७. तितलियाँ कहा बैठता है और क्यों ?
तितलियाँ फूल का रस पीने के लिए आकर बैठते हैं।

८. तितलियों के पंखों पर क्या चूसते हैं?

तितलियों के पंखों पर काँटा चूसते हैं।

९. किसका शरीर को भी बीध डालता है?

भँवरे के शरीर को भी बीध डालता है।

१०. फूल तितलियों को कहाँ बिठाता है?

फूल तितलियों को अपने गोद में बिठाता है।

११. फूल भँवरों को क्या पिलाता है?

फूल भँवरों को अपनी अनोखा रस पिलाता है।

१२. फूल की कलियाँ सबको कैसे खुश करते हैं?

फूल की कलियाँ अपनी खुशबू और अपने अनोखे रंग से सबको खुश करती हैं।

१३. व्यक्ति किस से प्रसन्न हो जाते हैं?

व्यक्ति फूल की सुगन्ध और रंग से प्रसन्न हो जाते हैं।

१४. कौन आँखों को खटकता है?

काँटा सब की आँखों में खटकता है।

१५. फूल किस पर शोभा पाता है?

फूल देवताओं के सिर पर शोभा पाता है।

१६. काँटे का बड़प्पन क्यों नहीं होता है?

काँटे का जन्म सुन्दर पौधे पर हुआ परन्तु उसमें अपना बड़प्पन नहीं होता।

१७. आदमी कैसे महान बनता है?

आदमी ऊँचे कुल में जन्म लेने पर बड़ा नहीं बनता बल्कि अपने गुणों के कारण महान बनता है।

१८. व्यक्ति क्या अपना चाहिए।

व्यक्ति गिणों को अपना चाहिए तभी कुल का बड़प्पन होगा।

२. संदर्भ सहित व्याख्य कीजिए।

१. है जनम लेते जगह में एक ही
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उनपर चमकता चाँद भी
एक ही-सी चाँदनी है डालता।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन', नामक पाद्य पुस्तक के 'फूल और काँटा' नामक कविता से लिया गया है। इसका लेखक है अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'जी है।

संदर्भ :- इस कविता में कवि ने फूल और काँटा के परस्पर-विरोधी स्वभाव का चित्रण किया है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि फूल और काँटा दोनों एक ही जगह से जन्म लेते हैं और एक ही पौधा दोनों को देखरेख और पालन-पोषण करता, एक ही चाँद की रोशनी दोनों को मिलती थी रात में उन पर चमकता हुआ चन्द्रमा एक जैसी चाँदनी डालता है। दोनों को ही प्रकृति का प्रेम समान रूप से मिलता है। लेकिन दोनों के स्वभाव और व्यवहार में बहुत अंतर दिखता। कवि कहना चाहते हैं कि केवल अच्छे कुल में जन्म लेने से और अच्छे कुल में प्रवेश में रहने से ही किसी का व्यवहार अच्छा नहीं हो जाता बल्कि यह दोनों की आंतरिक प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। फूल हमेशा अच्छाई और काँटे हमेशा बुराई का ही प्रतीक होगा।

विशेष :- कवि ने फूल और काँटे का तुलनात्मक वर्णन किया है।

२. मेंह उनपर है बरसता एक सा
एक-सी उनपर हवाएँ हैं बहीं,
पर सदा ही यह दिखाते हैं हमें
ढंग उनके एक से होते नहीं।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन', नामक पाद्य पुस्तक के 'फूल और काँटा' नामक कविता से लिया गया है। इसका लेखक है अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'जी है।

संदर्भ :- इस कविता में कवि ने फूल और काँटा के परस्पर-विरोधी स्वभाव का चित्रण किया है।

व्याख्या :- कवि कहता है कि फूल और काँटे दोनों को एक समान से हवा के झोका और एक ही बरसात दोनों को समय के अनुसार मिलता है। अतः सब कुछ समान होते हुए भी दोनों के ढंग व्यवहार एक से नहीं है। दोनों का स्वभाव एक-जैसा नहीं है बल्कि भिन्न है।

विशेष :- कवि ने फूल और काँटे के परस्पर विरोधी स्वभाव को स्पष्ट किया है

३. छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर वसन।
प्यार-डुबरी तितलियों का पर कतर,
भीरे का है बेध, देता रयाम तन।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन', नामक पाद्य पुस्तक के 'फूल और काँटा' नामक कविता से लिया गया है। इसका लेखक है अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'जी है।

संदर्भ :- इस कविता में कवि ने फूल और काँटा के परस्पर-विरोधी स्वभाव का चित्रण किया है।

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में काँटे के स्वभाव के बारे में बताया गया है। काँटा हाथ लगाने वाले की अंगुली में चुभ जाता है तथा किसी का सुन्दर कपड़ा फाड़ देता है, तो हंसती खेलती तितलियों के सुंदर पंखों को कतर देता है, तो कभी झूमते मंडराते गुगुनाते भंवरे की रयाम तन को बेध देता है। इसी तरह काँटा प्यार में डूबी

हुई, फूल पर बैठे कर रस चूसने वाली तितलियों के पों को काट देता है। भँवर के काले शरीर को भी बोध डालता है।

विशेष :- कवि ने काँटे के स्वभाव का यथार्थ वर्णन किया है।

४. फूल लेकर तितलियों को गोद में
भरें को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों और मिराले ढंग से,
है सदा देत कली जी को खिला।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन', नामक पाठ्य पुस्तक के 'फूल और काँटा' नामक कविता से लिया गया है। इसका लेखक है अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'जी है।

संदर्भ :- इस कविता में कवि ने फूल और काँटा के परस्पर-विरोधी स्वभाव का चित्रण किया है। और यह फूल के स्वभाव का सुन्दर वर्णन किया है।

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में काँटे के स्वभाव का वर्णन किया गया है। फूल तितलियों को अपनी अनेखा रस पिलाता है फूल की कलियाँ अपनी खुशबू और अपने अनोखे रंग से हमेशा सब के दिल को खुश करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति फूल की सुगन्ध और रंग से प्रसन्न हो जाता है।

विशेष :- कवि ने काँटे के स्वभाव का यथार्थ वर्णन किया है।

५. है खटकता एक सबकी आँख में
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

प्रसंग :- यह पद्यांश 'काव्य रंजन', नामक पाठ्य पुस्तक के 'फूल और काँटा' नामक कविता से लिया गया है। इसका लेखक है अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'जी है।

संदर्भ :- इस कविता में कवि ने फूल और काँटा को बुरा और अच्छा लगने का बात कहता है।

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में फूल और काँटे दोनों की तुलना की गई है। इनमें से काँटा सब की आँखों में खटकता है। बुरा लगता है पर फूल देवताओं के सिर पर शोभा पाता है। कवि कहता है कि खानदान की बड़ाई किस काम की अगर अपने में बड़प्पन की कमी हो। काँटे का जन्म सुन्दर पौधे पर हुआ परन्तु उसमें अपना बड़प्पन नहीं होता। इसलिए बुरा समझा जाता है। भाव यह है कि आदमी ऊँचे कुल में जन्म लेने पर बड़ा नहीं बनता बल्कि अपने गुणों के कारण महान् बनता है। इसलिए व्यक्ति को गुणों को ही अपनाना चाहिए तभी कुल का बड़प्पन होगा।

विशेष :- कवि ने फूल और काँटे का अच्छा और बुरा गुणों को वर्णन किया है।

३. 'फूल और काँटा' कविता का सांगंश अपने वाक्यों में लिखिए।

यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'फूल और काँटा' नामक कविता से लिया गया है। जिसका लेखक 'अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध' जी है।

फूल पर काँटा' नामक कविता में कवि ने फूल और काँटे का तुलनात्मक वर्णन करते हुए स्वभाव में भिन्नता प्रकट की है। इसके अनुसार फूल और काँटा एक स्थान से उत्पन्न होते हैं तथा बढ़ते हैं। एक जैसी हवा, बारिश, धूप उनको लगती है फिर भी दोनों की स्वभाव बहुत भिन्न है। एक अपनी बुराई दिखाता है तथा दूसरा अपनी अच्छाई प्रकट करता है।

काँटा सबके हाथों को छेदत है, वस्त्र फाड़ता है, तितलियों तथा भँवरों के शरीर को नोथता है परन्तु फूल सब को अपनी महक तथा सुगन्धि से प्रसन्न करता है । कवि यह कहना चाहता है कि अच्छे कुल में जन्म लेने का क्या लाभ अगर अपने आप में बड़प्पन नहीं है । अपने गुणों के कारण ही कोई सम्मान प्राप्त करता है , परिवार के कारण नहीं ।

६. माँ के प्रति —माखनलाल चतुर्वेदी

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए ।

१. 'माँ के प्रति' नामक कविता का कवि कौन है?

माँ के प्रति नामक कविता का कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी है ।

२. पहली बार गोद में आने वाला कौन है?

पहली बार गोद में आने वाला बच्चा है ।

३. पहली बाद बच्चा दुनिया में आने के वक्त क्या करता है?

पहली बाद बच्चा दुनिया में आने के वक्त रोता करता है ।

४. शिशु को प्यार कौन देते है?

शिशु को माँ प्यार देती है ।

५. माँ की आंखाएँ कौन-सी है?

माँ की आंखाएँ वह युवक बने और अच्छे पढ़े लिखे ।

६. घर क्यों खुशहाली भरती है?

अच्छे रंगतान से गृहस्थी सँभल ने के वक्त खुशहाली भरती है ।

७. क्यों शिशु चीखता है?

शिशु का पेट खाली होने के वक्त चीखता है ।

८. पेट भरने के वक्त शिशु क्या करता है?

पेट भरने के वक्त शिशु मुस्कुराता है ।

९. कुल का पहला वंश कौन है?

कुल का पहला वंश शिशु है ।

१०. कहाँ जाते-जाते थक गया?

सिंधु-तट पर जाते-जाते थक गया ।

११. माँ जीवन में क्या प्रार्थना करती है?

जीवन पर्यन्त सुख, शांति, समृद्धि की प्रार्थना करती है ।

१२. माँ से शिशु को उपहार में क्या मिलता है?

माँ से शिशु को उपहार में कोमल मधुर ममत्व भरा चुंबन मिलता है ।

२. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।

१. ओ माँ, मैं जब पहली बार

तुम्हारी गोद में आया

तो बहुत रोया था

रोया था इसलिए कि

पता नहीं कैसे, कितना प्यार दोगी तुम ।

प्रसंग :- यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'माँ के प्रति' नामक कविता से लिया गया है । जिसका लेखक 'स्वदेशी भारती' जी है ।

संदर्भ :- कवि कहता है कि शिशु दुनिया में आया तो उनका प्यार और उनकी रोने बारे में वर्णन करते हैं ।

व्याख्या :- कवि कहता है कि शिशु माँ के पेट से पहले बार बाहर आने के वक्त माँ के गोद में बहुत रोता है की पहले तो माँ के पेट में सुरक्षित था, लेकिन अभी इस दुनिया में आने के वक्त पता नहीं कैसे प्यार मिलता है मुझे माँ की गोद में करके रोता है ।

विशेषता :- कवि यह कविता में शिशु का पहली बार दुनिया में आने का वर्णन करते हैं ।

२. अपने शिशु से

हर माँ की आशाएँ होती हैं

कि वह युवक बने,

अच्छे से पढ़े लिखे,

सुन्दर सी बहू आए

जो माँ की सेवा करे,

गृहस्थी सँभाले,

अच्छी सांतान जने,

घर को खुशहाली से भर दे ।

प्रसंग :- यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'माँ के प्रति' नामक कविता से लिया गया है । जिसका लेखक 'स्वदेशी भारती' जी है ।

संदर्भ :- कवि कहता है कि माँ अपनी शिशु के उपर कितना प्यार देती है और उनके उपर होने वाले आशाओं के बारे में कहती है ।

व्याख्या :- कवि कहता है कि माँ शिशु इस दुनिया में आने के बाद माँ को शिशु के उपर अलग-अलग आशाएँ रहती है इस लिए माँ बच्चे को अच्छे युवक बनने के लिए कहती है अच्छेसे पढ़ना, लिखने की सलहा देती है और शदि करके सुन्दर बहू को लेकर आना मेरा सेवा करवाना अच्छी सांतान से गृहस्थी सँभालना इस सांतान से पूरा घर खुशी से भर जाते है ।

विशेषता :- माँ की आशाओं का वर्णन किया है ।

३. किन्तु माँ,

मैं तो तुम्हारी गोद में

पहली बार आया

तब निग शिशु था ।

दिमाग के रेशे बन रहे थे

सोच थी नहीं उस समय

बस एक गुदगुदा माँस का लोथरा था

जिसमें एक पेट था

जो खाली होने पर चीखता

और भर जाने पर मुस्कन से

तुम्हारी आँखों में खुशी के आँसू देखता और

आनंद स्फुरण से भर देत घर-संसार

जब मैं आया तुम्हारी गोद में पहली बार ।

प्रसंग :- यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'माँ के प्रति' नामक कविता से लिया गया है । जिसका लेखक 'स्वदेशी भारती' जी है ।

संदर्भ :- कवि कहता है कि माँ के गोद में आने आले बच्चे अपनी पेट भरने वाले घटना के बारे में कहता है ।

व्याख्या :- कवि शिशु के बारे में कहते हुए है कि शिशु ने कहा माँ मैंने पहली बार तुम्हारी गोद में आया तब से मैं एक दम छोटा सा शिशु था । मेरा मन में मैंने सोचा था कि उस समय बस मैं एक कोमल सा माँस का टुकड़ा जिसमें एक छोटा सा पेट था वह खाली होने के वक्त बहुत चीखना या रोना उस समय दूध पीने के वक्त उनकी भूँद पर मुस्कुराहट से तुम्हारी आँखों से आँसू देखकर आनंद से मेरा शरीर कंपन से भरा पूरा घर या संसार बहुत खुश है कि मैं पहली बार तुम्हारी गोद में आया ।

विशेषता :- कवि शिशु का भूख और खुशी के बारे में वर्णन किया है ।

४. मैं उस समय अज्ञान निर्बोध शिशु था

तुम्हारी चिंता, तुम्हारी भविष्य की आशा

तुम्हारे सपने, पहचान नहीं सकता था

फिर भी तुम्हारी खुशी

और दुःख के आँसू

जब-जब मेरे कफलों को भिगोते थे

तब-तब मैं सहम उठता था

क्योंकि मैं तुम्हारे हृदय का दर्शन था

और तुम्हारे कुल का पहला वंश था ।

प्रसंग :- यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'माँ के प्रति' नामक कविता से लिया गया है । जिसका लेखक 'स्वदेशी भारती' जी है ।

संदर्भ :- कवि कहता है कि शिशु ने माँ के प्रति खुशी और दुःख के आँसू के बारे में वर्णन किया ।

व्याख्या :- कवि कहता है कि शिशु पहले माँ के बारे में नहीं सोचता है माँ कहने के बात भी नहीं सुनता था । अभी उन्हें मालूम हुआ की माँ मैंने पहले तुम्हारी बात को इनकार किया था कि तुम्हारी चिंता, भविष्य की आशा और सपने को मैंने पहचाना नहीं सका । फिर भी तुम्हारी दुःख के आँसू तुम्हारी गले

में आकर भिगोते थे तब मुझे डर लगा कि मैं तुम्हारी हृदय का एक भाग हूँ । और तुम्हारी कुल की पहला वंश था ।

विशेषता :- कवि यह माँ की आँसू और खुशी की आँसूओं के बारे में वर्णन किया है ।

५. मेरे भीतर तुम्हारी आत्मा की छाया थी

तुम्हारे दुःख, तुम्हारे आँसू

मेरे भीतर के शिशु-मर्म को प्रभावित करते

परंतु आज मैं समय-सिंधु तट पर

चलते-चलते थक गया हूँ ।

शरीर-सौंदर्य का भनावशेष मात्र रह गया हूँ

फिर भी तुम माँ हो, और माँ शाश्वत होती है

किसी के जीवन में, सिर्फ माँ ही होती है

जो उसके सुख-दुःख को हृदय से लगाती है

और जीवन पर्यंत सुख, शान्ति, समृद्धि की

प्रार्थना करती है ।

प्रसंग :- यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'माँ के प्रति' नामक कविता से लिया गया है । जिसका लेखक 'स्वदेशी भारती' जी है ।

संदर्भ :- कवि कहता है कि शिशु ने माँ कि दुःख और आँसू के बारे कहने का वर्णन किया ।

व्याख्या :- कवि कहता है कि माँ को अपनी शिशु बड़ा होकर अच्छे पढ़े लिखे अच्छा काम करे, लेकिन शिशु के मन में तो पहले माँ के भावना पहले मन में नहीं आया था । अभी मुझे मालूम हो रहा है कि तुम्हारे दुःख और आँसू मेरे भीतर मन में रहस्य को प्रभावित करते हैं । वो सभी सोचते-सोचते चिंधु तट पर थक गया हूँ । शरीर का सौंदर्य या कोई भी होने दो तुम तो माँ हो तुम बोलने वाले सत्य होता है । सभी के जीवन में सिर्फ माँ ही होती है जो भी

सुख-दुख हृदय में लगती है और जीवन पर्यान्त सुख, दुःख, शान्ति, संमृद्धि का प्रार्थना करती हूँ।

विशेषता :- कवि ने शिशु की मन की भावना और माँ की दुःख और आँसू के बारे में कहते हैं।

६. माँ का कभी भी नहीं होता प्यार कलुष

और इसे मैंने अनुभव किया

जब नंगे बदन

तुम्हारी कोख से निकल कर रोया था

और तुम्हारा कोमल मधुर समत्व भरा चुंबन

उपहार में मिला था।

प्रसंग :- यह वाक्य 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'माँ के प्रति' नामक कविता से लिया गया है। जिसका लेखक 'स्वदेशी भारती' जी है।

संदर्भ :- कवि कहता है कि शिशु को अपनी मन की भावनाओं को कैसे बाहर निकल कर कहने का बात।

व्याख्या :- कवि ने कहा कि शिशु को बाद में मालूम होगा कि माँ हमें क्यों इतना बोल रही थी कि पढ़ा-लिखा अच्छे आदमी बने करके उस समय तो मेरा मन मैं माँ के प्रति प्यार नहीं था लेकिन अभी तो माँ के मन में कुछ भी गंदा या झूठा प्यार नहीं था। बेटे को अभी अनुभव किया कि मेरा नंगे बदन को अपनी पेट से इन्कलकर रोया था और तुम्हारा कोमल मधुर ममता से बरा हुआ चुंबन को अभी उपहार में मिला था।

विशेषता :- कवि ने माँ और बेटे का ममता के बारे में वर्णन किया है।

३. टिप्पणी लिखिए।

१. माँ के प्रति/माँ के सपने

शीर्षक :- माँ के प्रति/माँ के सपने

यह शीर्षक 'काव्य रंजन' नामक पाठ्य पुस्तक के 'स्वदेश भारती' के रचना/

कविता 'माँ के प्रति' नामक कविता से लिया गया है।

कवि ने कहा कि माँ और बच्चे का प्यार को वर्णन करना बहुत मुश्किल है। बच्चे इस दुनिया में पहली बार आने के वक्त कितना रोता है बाद में माँ के गोद में आने के बाद चुप हो जाता है। कवि ने माँ ने अपने बच्चे दुनिया में आने के उनकी स्वपना तो बहुत होती है, लेकिन बेटे ने उस को पहले नहीं मानता है। माँ तो अपने बेटे अच्छे पढ़-लिखकर अच्छा आदमी बनना, सुन्दर सी बहू को अपनी सेवा के लिए लेकर आना। अपनी गृहस्थी संभालना अच्छे संतान से घर खुशी से भर देना। फिर भी माँ मैंने इस दुनिया में पहली तो मैं एक माँस का एक टुकड़ा था बाद में पेट से निकल कर इस दुनिया में आने के बाद भूख से रोया था पेट भरने के बाद रोना बंद हुआ। तुम्हारी आँख में आँसू देखकर मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारे सपना क्या है और तुम्हारी इच्छा क्या है सभी कुछ मालूम हुआ। माँ की आँसू देखकर बेटे के मन माँ के प्रति प्यार निकलकर आता है।

७. मोम दीप मेरा —माखनलाल चतुर्वेदी

१. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य या वाक्यांश में लिखिए।
१. 'मोम दीप मेरा' नामक कविता के कवि कौन है?
- 'मोम दीप मेरा' नामक कविता के कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी हैं।
२. सूझ का साथी कौन है?
- सूझ का साथी कवि का मोमदीप है।
३. बेबस कौन है?
- मोमदीप बेबस है।
४. मोमदीप मेरा कविता के लेखक का नाम बताइए।
- माखनलाल चतुर्वेदी।
५. तम के साथ कौन-सा युद्ध तना?
- तुमुल युद्ध।
६. सूझों के रथ-पथ का ज्वलित लघु चितेश कौन है?
- सूका सथि कवि का मोम दीप है।
७. प्रकाश सिन्धु कहाँ से झर रहा है?
- प्रकाश सिन्धु मोम दी से झर रहा है।
८. सूरज को कौन ढेर रहा है?
- सूरज को मोमदीप ढेर रहा है।
९. नभ की गोद कौन भर रहा है?
- नभ की गोद तम भर रहा है।
१०. सूरज को कौन छू रहा है?
- सूरज को मोमदीप छू रहा है।
१०. लीला में मोम दीप कहाँ रहता है?
- मोम दीप लीला में खो जाता है।

२. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

१. सूझ का साथी
मोम दीप मेरा।
कितना बेबस है यह,
जीवन का रहस्य है यह
छन-छन, पल-पल, बल बल
छू रहा सबेरा, अपना अस्तित्व भूल
सूरज को ढेर
मोम दीप मेरा।

प्रसंग :— यह वाक्य हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'कव्य रंजन' संकलित कविता 'मोम दीप मेरा' से उद्धृत है। इसके रचयिता हैं 'माखनलाल चतुर्वेदी' जी हैं।

संदर्भ :— यह वाक्य में कवि अपनी सूझ के साथी मोम दीप को संबोधित कर रहा है।

व्याख्या:— कवि कह रहा है कि उसका मोम दीप अत्यंत बेबस है। यही मोमदीप जीवन का रस भी है जो कि हर समय हर तरफ अपना प्रकाश छानता रहता है। यह मोम दीप धीरे धीरे बड़ा होता हुआ शबरे को छूता है। मोम दीप अपना अस्तित्व भूल जाता है और सूरज को पुकारने लगता है। कवि अपना ज्ञान मोम दीप अति प्रिय है जोकि खोटा सा होते हुए भी सूरज को पुकार रहा है। कवि अपने ज्ञान और विवेक को मोम रूपी दीपक के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। मोमदीप स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है यही भावना कवि की भी है।

२. इतना बेबस दीखा
इसने मिटना सीखा
रक्त रक्त, बिंदु बिंदु
झर रहा प्रकाश सिंधु
कोटि-कोटि बना व्याप्त

छोटा सा घेरा ।

मोम दीप मेरा ।

प्रसंग :- यह वाक्य हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता से 'मोम दीप मेरा' से उद्धृत है। इसके रचयिता हैं 'माखन लाल चतुर्वेदी' जी हैं।

संदर्भ :- यह वाक्य मैं कवि अपनी बेबस मोमदीप की व्यथा को उज़गर कर रहा है।

व्याख्या:-कवि कह रहा है किस उसका मोम दीप बहुत बेबस है। उसके मोम दीप ने केवल मिटना सीखा है। उसने स्वयं मिटकर दूसरों को प्रकाश देना सीखा है। मोम दीप रक्त रक्त जल रहा है और बूंद-बूंद उसका प्रकाश समुद्र की तरह फैलात जा रहा है। उसके छोटे से घेरा का प्रकाश अब कोटि-कोटि जनों तक पहुँच चुका है। मोम दीप का प्रकाश अंधेरे को चीरत हुआ जन-जन तक पहुँच रहा है। कवि अपने ज्ञान और विवेक को संसार के सब जनों तक पहुँचाना चाहत है।

३.जी से लग, जब बैठ

तम बल पर जमा पैठ

जब चाहूँ जाग उठे

जब चाहूँ सो जावे,

पीड़ा में साथ रहे

लीला में खो जावे ।

मोम दीप मेरा ।

प्रसंग :- यह वाक्य हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'मोम

दीप मेरा' से उद्धृत है। इसके रचयिता हैं 'माखन लाल चतुर्वेदी' जी हैं।

संदर्भ :- कवि का मोम दीप उसके जी से लगा जाता है और उसकी जेब में बैठ जाता है।

व्याख्या:-कवि का मोम दीप अंधेरा की ताकत को तोड़ता है। कवि जब भी चाहे अपने ज्ञान और विवेक के मोम दीप को जगा लेता है और कवि जब भी चाहे

वह अपने मोमदीप को सुला देता है। कवि का मोम दीप पीड़ा में उसके साथ रहता है और जब कोई लीला होती है तो कवि का मोम दीप उसी लीला में जो जाता है। कवि का मोम दीप उसके सुख-दुःख का साथी है। कवि अपने ज्ञान और विवेक को आवश्यकतानुसार जग लेता है अथवा सुला देता है।

४.नभ की तम गोद भरे

नखत कोटि, पर न झरे

पढ़ न सक्य उनके बल

जीवन के अक्षर ये ।

आ न सके उतर उतर

भूल न मेरे घर ये ।

इन पर गर्वित न हुआ

प्रणय गर्व मेरा

प्रसंग :- यह वाक्य हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'मोम दीप मेरा' से उद्धृत है। इसके रचयिता हैं, 'माखन लाल चतुर्वेदी' जी हैं।

संदर्भ :- यह वाक्य मैं कवि कह रहा है कि अंधेरा तम की गोद भर रहा है उस समय कहा है।

व्याख्या:-कवि कह रहा है कि अंधेरा तम की गोद भर रहा है पूर्ण आकाश में अंधेरा भरा हुआ है। लेकिन फिर भी एक सितारा टूट कर नीचे नहीं गिरा। कवि उनके जीवन अक्षर के बल नहीं पढ़ सका और ये जीवन अक्षर कभी भूले से भी कवि के घर नहीं आए। इन पर कभी भी का प्रेम गर्वित नहीं हुआ। बस कवि के साथ सदैव उसका मधुर दीपक रहा। कवि अपने प्रेम पर अभिमान नहीं कर रहा है लेकिन सत्य यही है कवि को अपने मधुर मोम दीप से अत्यंत प्रेम है। कवि का ज्ञान एवं विवेक रूपी मोम दीप कवि के जीवन को प्रज्वलित कर रहा है।

५. मेरे बस साथ मधुर मोम दीप मेरा ।

जब चाहुँ मिल जावे

जब चाहुँ मिट जावे

तुम से जब तुमुल युद्ध

ठने, दौड़ जुट जावे

सूझों के रथ पथ का ज्वलित लघु चितेरा ।

मोम दीप मेरा ।

प्रसंग :- यह वाक्य हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'मोम दीप मेरा' से उद्धृत है। इसके रचयिता हैं, 'माखन लाल चतुर्वेदी' जी हैं।

संदर्भ:- यह वाक्य 'मे...कवि...अपने...ज्ञान और विवेक रूपी मोम दीप की विशेषताओं को उजागर कर रहा है।

व्याख्यान:- कवि कह रहा है कि वह जब चाहे तब उसे उसका मोम दीप मिल जाता है। कवि जब चाहे वह उसका मोम दीप मिट भी जाता है। मोमदीप का मिलना और मिटना कवि की इच्छा पर निर्भर करता है। जब मोमदीप का अंधेरे से घोर युद्ध होता है तो कवि का मोमदीप ठन जाता है और दौड़ कर युद्ध लड़ने लड़ता है। कवि का मोमदीप सूझों से भरा हुआ है और वह छोटा सा लघु चितेरा सदा अंधेरे से लड़ता रहता है और स्वयं जलकर अपनी काश हर तरफ फैलाता रहता है।

६. जब गरीब, वह लघु लघु

प्राणों पर यह उदार

बिंदु बिंदु

आग आग

प्राण प्राण

यज्ञ ज्वार

पीढ़ियाँ प्रकाश पथिक

जाग रथ गति चेहरा ।

मोम दीप मेरा ।

प्रसंग :- यह वाक्य हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'मोम दीप मेरा' से उद्धृत है। इसके रचयिता हैं, 'माखन लाल चतुर्वेदी' जी हैं।

संदर्भ :- यह वाक्य में कवि अपने ज्ञान और विवेक रूपी मोम दीप के त्याग और बलिदान को उजागर कर रहा है।

व्याख्यान:- कवि कह रहा है कि उसका मोमदीप अत्यंत छोटा और गरीब है। लेकिन उसके प्राण उदार हैं और वह सब की मदद कर रहा है। यह मोम दीप क्षण बिन्दु बिन्दु और आग आग होकर जल रहा है। कवि का मोमदीप अपनी पवित्रता का फैलाव कर रहा है। कवि का मोम दीप संसार रूपी रथ की रफ्तार को सहायता प्रदान करता है। कवि के मोम दीप के प्रकाश से आने वाली पीढ़ियाँ अपना पाएंगी और अपनी मंजिन की तरफ आगे बढ़ती जाएंगी।

३. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. कवि ने मोमदीप को अपना साथी क्यों माना है?

कवि का ज्ञान और विवेक ही उसका मोम दीप है। कवि ने मोम दीप को इसीलिए अपना साथी कहा है क्योंकि कवि ज्ञान दीप जीवन रस की तरह है जो छनछन पलपल बढ़कर सबेरे को छूता है। कवि को अपना मोम दीप इसीलिए इतना प्रिय भी है क्योंकि उसके मोम दीप ने हमेशा मिटना सीखा है जहाँ से बिन्दु बिन्दु प्रकाश सदैव झरता रहता है। कवि जब चाहे अपने मोमदीप को जगा देता है।

कवि जब चाहे तब उसे उसका मोम दीप मिल जाता है और जब वह चाहे तब अपने मोम दीप को मिटा देता है। मोम दीप हर पल कवि के साथ साथ रहता है, इसीलिए कवि ने मोम दीप को अपना साथी कहा है। कवि का मोम दीप छोटा सा है लेकिन उसका प्रकाश दूर दूर तक फैलता है और आनेवाली पीढ़ियाँ भी उसके प्रकाश से जगमगा उठती हैं। मोम दीप कवि का सच्चा साथी है।

२. 'मोम दीप मेरा' कविता के द्वारा कवि संदेश देना चाहता है?

मोम दीप कविता के द्वारा कवि संदेश देना चाहता है कि सदैव अपने ज्ञान और विवेकको सही देश में प्रयोग करना चाहिए। ज्ञान और विवेक का मोम दीप छोटा

सा होता है लेकिन उसका प्रकाश दूर तक जाता है। मनुष्य को जीवन में सदैव विवेक से काम लेना चाहिए। विवेक से मनुष्य को अच्छे बुरे की पहचान होती है। मोम दीप अर्थात् ज्ञान का दीप अंधेरे से भयंकर युद्ध करता है और अपनी सूझों से को दूर भगा देता है। कवि का मोम दीप एक ज्वलित लघु चितेरा है। मोम दीप के प्रकाश से आने वाली पीड़ियों को सस्ता मिलेगा। मोम दीप संदेश देता है कि हमें कठिनाइयों से हारना नहीं चाहिए अपितु निरंतर प्रयास करके कठिनाइयों से हारना नहीं चाहिए अपितु निरंतर प्रयास करके कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। मोम दीप यह भी संदेश देता है कि ऐसा कोई भी अंधेरा नहीं है जिसे चीरा जा सके। ज्ञान और विवेक सदैव मनुष्य के साथ साथ चलता है और आवश्यकता अनुसार अपना रूप बदल लेता है। मोम दीप यह भी संदेश देता है कि हम गरीब हो सकते हैं लेकिन हमें अपने प्राण उदार रखने चाहिए। भीतर का प्रकाश ही वास्तविक प्रकाश है।

३. 'मोम दीप मेरा' कविता का आशय स्पष्ट कीजिए।

'मोम दीप मेरा' कविता का आशय है कि हमें अपने ज्ञान और विवेक से अंधकार और दूसरी बुराइयों से सदा लड़ते रहना चाहिए। मोम दीप छोटा सा होता है लेकिन वह सूरज को भी पुकार उठता है। हम कभी भी किसी भी लघु नहीं समझना चाहिए। मोम दीप बंबस हो सकता है लेकिन वह मिटना जानता है और जो मिटना जानता है वही होता है बड़ा। मनुष्य को अपने ज्ञान और विवेक का सही उपयोग करना चाहिए और आवश्यकता के अनुसार उन्हें कार्यान्वित करना चाहिए।

मनुष्य का ज्ञान विवेक की समझ देता है और विवेक से अच्छे बुरे का पता लगता है। मोम दीप सदैव अंधेरे से लड़ता है और अपनी सूझों से बड़ी-बड़ी कठिनाइयों के हल निकालता रहता है। ज्ञान और विवेक का मोम दीप ऐसा प्रकाश छोड़ जाता है जिससे आनेवाली पीड़ियों को भी सहजता से रास्ता मिल जाता है। मनुष्य का सदा अपने ज्ञान विवेक से समाज से समाज का उद्धार करना चाहिए।

७. सन्ध्या-सुन्दरी

-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

१. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य या वाक्यांश में लिखिए।

१. सन्ध्या-सुन्दरी कविता का लेखक कौन है?

सन्ध्या-सुन्दरी कविता का कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी है।

२. निराला जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

निराला जी का जन्म १८८७ ई. में बंगाल के महिषादल राज्य के मोदिनीपुर में हुआ।

३. मेघमय आसमान से क्या उतर रहा है?

मेघमय आसमान से सन्ध्या सुंदरी परी उतर रही है।

४. चंचलता का आभास कहाँ पर नहीं है?

तिमिरांचल में चंचलता का आभास नहीं है।

५. हँसता हुआ तारा कहाँ पर है?

हँसता हुआ तारा सन्ध्या सुंदरी के बातों से गुँथा हुआ है।

६. सब तरह कौन सा अव्यक्त शब्द गुँज रहा है?

सब तरह 'चुप चुप चुप' अव्यक्त शब्द गुँज रहा है।

७. थके हुए जीवों को सन्ध्या सुंदरी क्या पिला रही है?

सन्ध्या सुंदरी थके हुए जीवों को मदिरा का प्याला पिला रही है।

८. सन्ध्या सुंदरी थके हुए जीवों को कहाँ पर सुलाती है?

सन्ध्या सुंदरी थके हुए जीवों को अपने अंक पर सुलाती है।

९. सन्ध्या सुंदरी थके हुए जीवों को क्या दिखलाती है?

सन्ध्या सुंदरी थके हुए जीवों को विस्मृति के अगणित मीठे सपने दिखाती है।

१०. सन्ध्या सुंदरी किसकी नदी बहाती है?

सन्ध्या सुंदरी मदिरा की नदी बहाती है।

११. सन्ध्या सुंदरी कहाँ पर लीन हो जाती है?

सन्ध्या सुंदरी अर्द्धरात्री की निश्चलता में लीन हो जाती है।

१२. कवि के विरहाकुल कमनीय कंठ से क्या निकल पड़ता है?

कवि विरहाकुल कमनीय कंठ से एक विगाह निकल पड़ता है ।

३. संदर्भ सहित व्याख्या किजिए ।

१. दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह सन्ध्या-सुन्दरी परी-सी

धीरे-धीरे-धीरे

प्रसंग : यह पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'सन्ध्या सुन्दरी' से लिया गया है । इसके रचयिता हैं, हिन्दी के प्रसिद्ध कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी हैं ।

संदर्भ :— यह पद्यांश में कवि ने सन्ध्या सुंदरी का अत्यंत सुन्दर वर्णन किया है ।

व्याख्या : कवि सन्ध्या सुंदरी के आगमन के बारे में बता रहा है । सन्ध्या का समय है और सूरज डूब रहा है । बादलों वाले आकाश से सन्ध्या सुन्दरी धीरे धीरे अलसता-हुए धरती पर उतर रही है । इस प्रकार आकाश से उतरते हुए यह सन्ध्या एक सुन्दरी की तरह प्रतीत हो रही है । आकाश से धरती पर उतरती यह सन्ध्या सुन्दरी एक परी-सी लग रही है । इस कविता में कवि ने सन्ध्या सुंदरी का धीरे-धीरे धरती पर उतरने का अत्यंत सजीव वर्णन किया है । सन्ध्या का समय है और आकाश धरती से मिलने को आतुर है । सन्ध्या का समय मिलन का समय होता है इसीलिए सन्ध्या सुंदरी परी धरती पर अपने प्रेमी से मिलने के लिए धीरे-धीरे उतर रही है ।

२. तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,

मधुर मधुर हैं दोनों उसके अधर—

किन्तु गम्भीर, नहीं है उनमें हास-विलास ।

हँसता है तो केवल तार एक

गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से,

हृदय-राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक ।

प्रसंग : यह पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'सन्ध्या सुन्दरी' से लिया गया है । इसके रचयिता हैं, हिन्दी के प्रसिद्ध कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी हैं ।

संदर्भ : यह पद्यांश में कवि ने सन्ध्या सुंदरी एक परी की तरह धरती पर उतर गयी है और अब रात हो गयी है ।

व्याख्या : कवि ने सन्ध्या सुंदरी एक परी की तरह धरती पर उतर गयी है और अब रात हो गयी है । अंधेरे के आँचल में चंचलता का कोई भी आभास नहीं हो पा रहा है । उस संध्या सुन्दरी परी के दोनों अधर मधुर है लेकिन उन पर हँसी या उल्लास की कोई भी तंग तंगित नहीं हो रही है । उस सन्ध्या सुंदरी के काल लम्बे घुँघराले बाल हैं, जिनमें एक तारा गुँथा हुआ है । वह संकलता तारा सन्ध्या सुंदरी परी का हृदय से स्वागत कर रहा है । यह तारा सन्ध्या सुंदरी परी का एक रानी की तरह अभिषेक कर रहा है । सन्ध्या सुंदरी परी उस तारे के हृदय की रानी है और वह उसके स्वागत में अपने आप को अर्पित कर रहा है, सन्ध्या सुंदरी परी उदास है, उसके अधरों पर हास विलास नहीं है लेकिन उसके बालों में गुँथे तारे ने उसको जीवन्त बना दिया है ।

३. अलसता की-सी लता

किन्तु कोमलता की वह कली,

सखी नीरवता के कन्धे पर डाले बाँह,

छाँह-सी अम्बर-पथ से चली ।

नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,

नहीं होता कोई अनुशा-शाग-आलाप,

नूपुरों में भी रुनझुन-रुनझुन नहीं,

सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा "चुप, चुप, चुप"

है गुँज रहा सब कहीं -

प्रसंग : यह पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'सन्ध्या सुन्दरी' से लिया गया है। इसके रचयिता है, हिन्दी के प्रसिद्ध कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी हैं।

संदर्भ : यह पद्यांश कवि कह रहा है कि सन्ध्या सुंदरी सुन्दर तो बहुत है लेकिन थोड़ी अलसाई हुई है इसके उनकी वर्णन किया है।

व्याख्या : कवि कह रहा है कि सन्ध्या सुंदरी एक कली की तरह कोमल है, लेकिन वह अलसाई हुई है। सन्ध्या सुंदरी अपनी सहेली नीरवता के कंधे पर बाँह डाल कर अलसाती हुई एक छाया की तरह अम्बर पथ से धरती की ओर चलती है। उसके हाथों में कोई बीजा भी नहीं है और इसीलिए किसी भी गगन का आलाप भी सुनाई नहीं पड़ रहा है उसके नुपूरों से भी रुनझुन की आवाज़ नहीं आ रही है, बस एक गूँगा सा शब्द हर तरफ फैला हुआ है। एक अव्यक्त शब्द 'चुप, चुप, चुप'; ही सब तरफ गूँज रहा है। वातावरण में एक बोझिलता छाई हुई है और हर तरफ एक शान्ति प्रतीत होती है।

४. व्योमण्डल में जगतीतल में -

सोती शान्त सरोवर पर उस अमल कमलिनी-दल में -
सौन्दर्य-गर्विता-सरिता के अतिविस्तृत वक्ष स्थल में -
धीरे-धीरे-गम्भीर शिखर पर हिमगिरी-अटल-अचल में -
उताल -तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि-प्रबल में -
क्षिति में, जल में, नभ में, अनिल -अनल में -
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द -सा "चुप, चुप, चुप"
है गूँज रहा सब कहीं -

प्रसंग : : यह पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'सन्ध्या सुन्दरी' से लिया गया है। इसके रचयिता है, हिन्दी के प्रसिद्ध कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी हैं।

संदर्भ : यह पद्यांश में कवि उसी अव्यक्त शब्द 'चुप, चुप, चुप'; के बारे में वर्णन कर रहा है।

व्याख्या : कवि कह रहा है कि यह अव्यक्त शब्द सभी जगह व्याप्त है। वह अव्यक्त शब्द आकाश में, जल में, थल में, सरोवर में सो रहे कमल के फूलों में खिलखिला कर बहती सरिता के वक्षस्थल पर पहाड़ों के शिखरों पर उताल लहरों वाले समुद्र में, प्रलय जैसी गर्जन करनेवाले समुद्र में, अग्नि में, जल में, आकाश में, धरती पर, अर्थात् सृष्टि के कण-कण में अव्यक्त शब्द चुप, चुप, चुप व्याप्त है। पूरी सृष्टि में व्याप्त वह अव्यक्त शब्द हर तरफ गूँज रहा है और कवि इसी अव्यक्त शब्द की यात्रा का वर्णन कर रहा है। यह अव्यक्त शब्द परमात्मा की तरह सृष्टि के कण कण में अव्यक्त शब्द चुप, चुप, चुप व्याप्त है। पूरी सृष्टि में व्याप्त वह अव्यक्त शब्द हर तरफ गूँज रहा है और कवि इसी अव्यक्त शब्द की यात्रा का वर्णन कर रहा है।

५. और क्या है? कुछ नहीं।

मदिग की वह नदी बहती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला एक पिलाती,

सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह कितने मीठे सपने
अर्द्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,

कवि का बड़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पड़ता तब एक विहाग।

प्रसंग : यह पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'सन्ध्या सुन्दरी' से लिया गया है। इसके रचयिता है, हिन्दी के प्रसिद्ध कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी हैं।

संदर्भ : यह पद्यांश में कवि ने सन्ध्या सुंदरी में कवि आकाश से धरती पर धीरे धीरे उतरती सन्ध्या सुंदरी की सुन्दरता का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या : कवि ने सन्ध्या सुंदरी में कवि आकाश से धरती पर धीरे धीरे उतरती सन्ध्या सुंदरी तो कोमल से अलसाती सी धरती पर उतर रही है और गम्भीर है। उसके अधर

हँस नहीं रहे हैं। हर तरफ 'चुप, चुप, चुप' एक अव्यक्त शब्द गुँज रहा है कि उस अव्यक्त शब्द के अलावा और कुछ भी नहीं है। वह सन्ध्या सुंदरी मदिश की नदी बहाती सी आ रही है और धके हुए जीवों को वह अपने स्नेह का प्याला भिला रही है। सन्ध्या सुंदरी उन धके हुए जीवों को अपनी गोद में सुलाती है और उन्हें विस्मृति के अनगिनत सपने दिखलाती है। जब वह सन्ध्या सुंदरी आधी रात की नीरवता में लीन हो जाती है जब कवि का अनुशाग और प्रेम बढ़ जाता है।

राती की निरवता और सन्ध्या सुंदरी परी का लीलाओं कवि के अनुशाग को बढ़ा जाता है और उसी समय कवि के कमनीय कंठ से विरह मात्र गीत-फूट पड़ता है। यही कारण है कि कवि अक्सर अपनी रचनाएँ रात की नीरवता में ही अभिव्यक्त करते हैं। कविता की अंतिम पंक्तियाँ में कवि की सुजनता को उजागर किया है कि रात की नीरवता में किस प्रकार स्वतः कवि के कमनीय कंठ से विरहाकुल विहाग निकल पड़ते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१) 'सन्ध्या सुंदरी' कविता में कवि ने सन्ध्या सुंदरी का वर्णन किस परकार किया है?

यह कव्या हमारी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'सन्ध्या सुन्दरी' से लिया गया है। इसके रचयिता हैं, हिन्दी के प्रसिद्ध कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी हैं।

'सन्ध्या सुंदरी' कविता में कवि ने सन्ध्या सुंदरी का अत्यंत मनोहर चित्रण किया है। सन्ध्या का समय है, सूरज डूबने वाला है और बादलों से भरे आसमान से संध्या सुंदरी धीरे धीरे धरती पर उतर रही है। अंधेरे के आँचल में कहीं भी चंचलता नहीं है। सन्ध्या सुंदरी के दोनों अधर मधुर तो हैं पर उनमें कोई हास विलास नहीं है। सन्ध्या सुंदरी गंभीर है, लेकिन उसके घुंघराणी का अभिवेक कर्कश रहा है। सन्ध्या सुंदरी अलसाई हुई एक लता के समान है। यह कोमल कली अपनी सखी नीरवता के कंधे पर बाँड़ डालने आकाश से धरती की ओर चल रही है। उसके हाथों में कोई वीणा नहीं बज रही है और नाही कोई

प्रेम भरा राग अलापा जा रहा है। सन्ध्या सुंदरी शांत मंद गति से धीरे धीरे आसमान से धरती पर उतर रही है। उसके नुपुंगों में भी कोई रुनझुन का आवाज़ भी नहीं है। वह मदिश की वह नदी की बहाती आ रही है। वह धरती पर धके हुए जीवों को अपने स्नेह का एक प्याला पिलाती है और उन्हें अपनी गोद में बिठाकर स्मृति के अगणित मीठे सपने दिखाती है।

2) सन्ध्या सुंदरी कविता में अव्यक्त शब्द 'चुप चुप चुप' कहाँ कहाँ गुँज रहा है?

३) यह कव्या हमारी पाठ्यपुस्तक 'काव्य रंजन' संकलित कविता 'सन्ध्या सुन्दरी' से लिया गया है। इसके रचयिता हैं, हिन्दी के प्रसिद्ध कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी हैं।

सन्ध्या सुंदरी मेघमय आसमान से धीरे धीरे धरती पर उतर रही है। लेकिन वह हँस नहीं रही है, वह जरा गंभीर है। उसके हाथों में कोई वीणा नहीं और नुपुंगों में रुनझुन भी नहीं है। सिर्फ एक अव्यक्त शब्द 'चुप, चुप, चुप, चुप, गुँज रहा है' हर तरफ। वह अव्यक्त शब्द पूरे संसार में है, अंतर्निहित में है, पाताल में है। यह अव्यक्त शब्द संशोचन में गहरी नींद सोए कमलों के दल में है। यही अव्यक्त शब्द सुन्दर स्मृति के बड़े वक्षःस्थल पर अंकित है। यहई अव्यक्त शब्द गम्भीर त्रिखणों पर फैला हुआ है।

यह अव्यक्त शब्द तरंगों से उठकर गिनेरने वाले आघात में है। संसार की ऐसी कोई जगज नहीं है जहाँ यह अव्यक्त शब्द 'चुप चुप चुप' व्याप्त न हो। यह अव्यक्त शब्द जल में, आकाश में, अग्नि में, पानी में-सभी स्थानों पर मौजूद है। यही अव्यक्त शब्द 'चुप चुप चुप' गुँज रहा है सब कहीं। हर तरफ उसी की गुँज सुनाई पड़ रही है लेकिन इस अव्यक्त शब्द का नाम अहि 'चुप चुप चुप'। इस अव्यक्त शब्द में छिपी गुँज ही अपने आप में एक रहस्य है।

४) कवि के विरहाकुल कमनीय कंठ से स्वतः एक विहाग कब और कैसे निकल पड़ता है?

‘सन्ध्या सुंदरी’ कविता में कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निगला ने सन्ध्या सुंदरी का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है। सन्ध्या सुंदरी बादलों वाले आकाश से धीरे धीरे धरती पर उतर रही है। वह धीरे धीरे धरती पर उतरती है अपनी सखी नीरवता के साथ। वह नीरवता सन्ध्या सुंदरी को शांत रखती है। उसके हाथों में कोई वीणा नहीं बजती, उसके नूपुरों में कोई रुझान की आवाज नहीं होती। सिर्फ एक अव्यक्त शब्द ‘चुप चुप’ ही गूँजता रहता है हर कही। यह अव्यक्त शब्द पूरे वातावरण में फैला हुआ है। सन्ध्या सुंदरी मदिश की एक नदी बहाती आती है। और धरती के थके हुए जीवों को सस्नेह एक प्याला पिलाती है। वह उन्हें अपने अंक पर सुलाती है और उन्हें विस्मृति के मीठे सपने दिखाती है। अर्द्धरात्री की निश्चलता में जब सन्ध्या सुंदरी लीन हो जाती है तब कवि का अनुराग बढ़ जाता है। हर तरफ शांति होती है और किसी भी शब्द की गूँज नहीं होती। इसी समय कवि के विरहाकुल कमनीय कंठ से स्वतः एक विहाग फूट पड़ता है। कवि को कविता लिखने के लिए ऐसा ही वातावरण होता है। वातावरण की शांति और अव्यक्त शब्द चुप, चुप, चुप ही कविता के शब्द गढ़ते हैं।

सरकारी पत्रचार

• पत्र किसे कहते हैं?

पत्र को आप जानते होंगे इसे आम बोलचाल में चिट्ठि कहा जाता है पत्र संचार का एक माध्यम है जिसकी सहायता से सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया जाता है। पत्र संचार का लिखित माध्यम यह अक्सर कागज पर लिखा जाता है प्राचीन समय में पत्र पतों पर व कपड़े पर भी लिखा जाता था।

• पत्र कितने प्रकार होते हैं?

मनुष्य रूप से पत्र के तीन प्रकार हैं।

१. औपचारिक पत्र
२. अनौपचारिक पत्र
३. सरकारी पत्र

• **औपचारिक पत्र :-** ऐसे पत्र जो किसी विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखकर उन लोगों के पास भेजे जाते हैं जिनमें हमारे संबंध मात्र औपचारिक होते हैं, उन्हें औपचारिक पत्र कहते हैं।

औपचारिक पत्रों में - कक्षा अध्यापकों प्रधानाचार्यों, संपादकों, सरकारी एवं अन्य कर्मचारियों, कार्यालयों, अधिकारियों, बड़े-बड़े संस्थानों के निर्देशकों आदि को किसे गए पत्र जाते हैं।

जैसे :- शिकायती पत्र, प्रार्थना पत्र, आवेदन पत्र आदि।

• **अनौपचारिक पत्र :-** ऐसे पत्र जो अपने आत्मीय संबंधियों रिश्तेदारों, परिचितों आदि के लिखे जाते हैं, ये अनौपचारिक पत्रों को श्रेणी में आते हैं।

जैसे - माता-पिता, भाई-बहन, मित्र, बुआ, मौसी आदि।

- सरकारी पत्र :- ऐसे जो सरकारी उपक्रमों द्वारा एक कार्यालय या अधिकारी द्वारा दूसरे कार्यालय या अधिकारी को किसी भी प्रकार की सूचना, अधिसूचना देने के लिए लिखे जाते हैं।
- जैसे :- अर्थ सरकारी पत्र, प्रेस, विज्ञापि आदि।

सामान्य सरकारी पत्र

सरकारी पत्र से तात्पर्य उन पत्रों से है जिनका सरकारी काम के लिये किसी व्यक्ति, फर्म या व्यावसायिक फर्मों को लिखे जाते हैं।

शासन के द्वारा जो पत्र आदेश के रूप में भेजे जाते हैं, उन्हें शासनादेश पत्र कहते हैं। केन्द्रीय सरकार से भेजे जाने वाले पत्र को केन्द्रीय शासनादेश पत्र कहते हैं और राज्य सरकारों से भेजे जाने वाले पत्र को राज्य शासनादेश पत्र कहते हैं।

ऐसे पत्र जो सरकारी कार्यालयों द्वारा एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय को भेजे जाते हैं सरकारी पत्र कहा जाता है।

सरकारी / शासकिया पत्र का रूपरेखा

भारत सरकार

गृह-मंत्रालय

संख्या

प्रेषक,

सेवा में,

नई दिल्ली -१

दिनांक :

विषय : -----

महोदय,

मुझे यह निवेदन करने का निदेश हुआ है कि

आपका विश्वासपात्र

क, ख, ग

सचिव

नई दिल्ली -१, दिनांक : -----

संख्या -----

आवश्यक जानकारी / कार्यवाही के लिए प्रतिलिपियाँ प्रेषित

१. -----

२. -----

३. -----

क, ख, ग

सचिव

• सामान्य सरकारी पत्रों के छः प्रकार

यह सरकारी कार्यालयों में पत्र व्यवहार का सबसे सामान्य रूप है। यहाँ यह ध्यान रखने योग्य है कि सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के आपसी पत्रचार में पत्र के इस रूप को नहीं अपनाया जाता है।

हमें अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार के पत्र लिखने पढ़ने हैं, कभी अपने ही स्वजनों को तो कभी कार्यालय से पत्र व्यवहार करना पड़ता है। कभी किसी वस्तु को माँगने के लिए भी पत्र लिखा जाता है। इस प्रकार हम पत्रों को निम्न दो भागों में बाँट सकते हैं :-

१] औपचारिक पत्र

२] अनौपचारिक पत्र

• औपचारिक पत्रों में मुख्य रूप से निम्न पत्र हैं।

- १] सरकारी पत्र
- २] अर्द्धसरकारी पत्र
- ३] व्यावसायिक पत्र

• अनौपचारिक पत्रों के दो भागों बाँट सकते हैं।

१. सरकारी पत्र / शासकीय पत्र
२. निजी पत्र

• समाजिक पत्र में निम्नलिखित पत्र आते हैं

१. विविध पत्र
२. बधाई पत्र
३. परिचय पत्र
४. आमंत्रण पत्र
५. शोक पत्र

सरकारी पत्र/शासकीय पत्र

- परिभाषा :- सरकार को कामकाज से संबंधित पत्र सरकारी या शासकीय पत्र कहलाते हैं। इसका प्रयोग सरकारी विभागों / कार्यालयों द्वारा किया जाता है। सरकार के कामकाज के संबंध में विभिन्न तरह के पत्रचार के अन्तर्गत सबसे अधिक प्रयोग सरकारी पत्रों का होता है। इनका निश्चित प्ररूप और रचना शैली होती है। जिसे ध्यान में रखकर ये लिखे जाते हैं। इन्हें लिखते समय मौलिक प्रयोग करना उचित नहीं होता है। ऐसा नहीं है कि एक प्रदेश की सरकार अथवा कोई एक कार्यालय इन्हें एक तरह से लिखेगा और दूसरी सरकार तरह से।

• सरकारी पत्रों का विशेषताएँ

१. सरकारी पत्र पूरी तरह से औपचारिक होते हैं। इनमें व्यक्तिगत परिचय अथवा पहचान की झलक नहीं होती है।
२. यह संक्षिप्त और संतुलित होते हैं। इनमें नये-नये शब्दों का प्रयोग होता है।
३. इसमें राजभाषा की शब्दावली रखी जाती है।
४. सरकारी पत्र हमेशा अन्य पुरुष में लिखे जाते हैं, मैं हम सर्वनामों का प्रयोग इसमें नहीं किया जाता है।
५. सरकारी पत्रों में एक आदेश अथवा सूचना एक ही पैराग्राफ में लिखी जाती है।
६. यदि दूसरी बात कही जा रही है तो दूसरे पैराग्राफ से और २ की संख्या डालकर लिखी जाती है।

सरकारी पत्र के अनेक महत्वपूर्ण अंग होते हैं और किसी भी सरकारी पत्र में उन सब अंगों का यथोचित समावेश होना चाहिए।

1. सबसे ऊपर पत्र की संख्या लिखी जानी चाहिए।
2. फिर 'भारत सरकार' और उस मंत्रालय का नाम लिखना, जिसकी ओर से वह भेजा जा रहा है। बहुत बार युअह वस्तु कागज पर पहले से छपी भी होती है।
3. प्रेषक का नाम और पद
4. जिस व्यक्ति या अधिकारी के पास वह पत्र भेजा जा रहा है, उसका नाम और पद।
5. प्रेषक का स्थान और दिनांक।
6. पत्र का विषय
7. सम्बोधन
8. पत्र का कलेवर
9. स्वनिर्देश
10. प्रेषक के हस्ताक्षर और पद का उल्लेख
11. पृष्ठांकन

सरकारी पत्र लिखने की तरिका

- भारत सरकार के किसी मंत्रालय ओर से भेजे तो ---प्रारंभ: --- मुझे निदेश दिया गया है। ये लिखना जरूरी है।
- जो अधिकारियों को लिखे जा रहे हो, सम्बोधन केवल --- महोदय
- गैर-अधिकारी व्यक्तियों / समूहों - प्रिय महोदय / महानुभाव
- पत्र व्यावसायिक संस्थाओं को भेजे तो -महोदय-वृन्द/ मनाहुभाष
- सरकारी पत्रों की अंत में -भवदीय / आपका
- उसके बाद हस्ताक्षर-कना व्यक्ति के हस्ताक्षर और पदोत्पत्ति के साथ
- अपने अधिकार से पत्र लिखा / भेजे जाते तो मुझे निदेश दिया गया है - नही लिखना मुझे यह लिखने का गौरव प्राप्त हुआ है।

सरकारी पत्रों की रूपरेखा (out line of official letters)

संख्या -----(NO.)	भारत सरकार(Govt of India)	रक्षा मंत्रालय (Ministry of Defence)
प्रेषक(From)		
सेवा में, (To)		
नई दिल्ली-२ दिनांक	Date -----2022	
विषय(subject)		
महोदय		
आपके पत्र संख्या ---दिनांक के उत्तर में मुझे यह सूचित करने का निर्देश हुआ है कि ----		
भवदीय		
Your's faithfully		
क, ख, ग		
उप सचिव, भारत सरकार		
मई दिल्ली-२, दिनांक ----		
संख्या -----		
आवश्यक कार्यवाई / जानकारी के लिए		
निम्नलिखित शर्तों पर तिलिपियों प्रेषितः		
१.		
२.		
क, ख, ग		
उप सचिव		

संख्या १२३/२३

भारत सरकार
मंत्रालय

प्रेषक,

सचिव,

गृह मंत्रालय, उत्तर प्रदेश शासन

गृह मंत्रालय

लखनऊ, दिनांक : २५/११/२०२२

सेवा में

सचिव

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

नई दिल्ली

विषय : शाहाबाद उच्च न्यायालय के सामने स्थित भूमि के संदर्भ में ।

महोदय,

मुझे आपका ध्यान इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सामने स्थित भूमि की ओर आकृष्ट करने का भिदेश हुआ है । यह भूमि अनेक वर्षों से खाली पड़ी है । रक्षा मंत्रालय द्वारा इसका उपयोग नहीं किया जा रहा है ।

उत्तर प्रदेश सरकार इस भूमि का हस्तांतरण चाहती है । यहाँ पर प्रदेश सरकार की ओर से एक पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र बनाने की योजना है ।

इस मंत्रालय की स्वीकृति की प्रतीक्षा है ।

व्यवदीय

[ह-----]

सचिव, गृह मंत्रालय,

भारत सरकार,

नई दिल्ली-२, दिनांक -

प्रतिलिपि निम्नलिखित

१.

२.

३.

क. ख. ग
उप सचिव

अभ्यास प्रश्न -सामान्य सरकारी पत्र

१. राज्य में हो रही हिन्दी भाषा का विवरण माँगते हुए भारत सरकार के अवर सचिव की ओर से शिक्षा विभाग, तमिलनाडु सरकार को एक सामान्य सरकारी पत्र लिखिए ।

२. सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत सरकार नई दिल्ली ई ओर से अवर सचिव उच्च शिक्षा मंत्रालय कर्नाटक सरकार को एक सामान्य सरकारी पत्र लिखिए जिस में राज्य सभी विश्वविद्यालयों में एक समान पाठ्यक्रम जारी करने की दिशा में सुझाव माँगा गया हो ।

३. श्री अमिर शाह आई.ए.एस. उपसचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से अवर सचिव, शिक्षा मंत्रालय कर्नाटक राज्य को राज्य में पिछले दो वर्षों से हो रही हिन्दी की प्रगती का विवरण माँगते हुए एक सामान्य सरकार पत्र लिखिए ।

परिपत्र [circular]

परिपत्र क्या है ?

जब कोई सूचना या निर्देश एक साथ अनेक कार्यालयों को प्रेषित की जाती है, तो उसे परिपत्र कहते हैं। सूचना की पुष्टि को लिए प्रायः परिपत्र के साथ एक अलग नोटिस प्रेषित की जाती है। प्रायः कार्यालयों में परिपत्र के मुद्रित फार्म होते हैं जिस पर उस कार्यालय या कार्यालय का नाम मुद्रित रहता है।

परिपत्र पत्र-व्यवहार का अपने-आपमें पृथक कोई स्वतन्त्र रूप नहीं है। जब कोई सरकारी पत्र कार्यालय-ज्ञापन या ज्ञापन एक-साथ अनेक प्रेषितियों को भेजा जा रहा हो, तो उसे 'पतिपत्र' कहा जाता है। इससे स्पष्ट है कि आवश्यकता-अनुसार परिपत्र...

१) सरकारी पत्र

२) कार्यालय-ज्ञापन

३) ज्ञापन, तीनों रूपोंमें लिखा जा सकता है।

केन्द्र सरकार के द्वारा विभिन्न राज्य सरकारों को या राज्य सरकार अपने अधीनस्थ कार्यालयों को या कोई संस्थान अपने विभिन्न विभागों को जो आदेश-अनुदेश भेजता है, उसे परिपत्र [circular] कहते हैं।

परिपत्र तैयार करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

१. परिपत्र के शीर्ष पर परिपत्र संख्या और दिनांक अंकित किया जाता है।
२. परिपत्र में ऊपर प्रेषक मंत्रालय / कार्यालय का पता लिखा जाता है।
३. परिपत्र में ऊपर संबोधन [महोदय, श्रीमान आदि] और नीचे स्वबोधक [भवदीय, आपका, आपकी आदि] नहीं लिखा जाता है।
४. परिपत्र अन्य पुरुष में लिखा जाता है।
५. परिपत्र के अंत में दाहिनी ओर संबंधित अधिकारी के हस्ताक्षर होने चाहिए।
६. परिपत्र प्रायः टंकित या चक्रटंकित [साइक्लोस्टाइल] होते हैं, क्योंकि इनकी संख्या ज्यादा होती है।

परिपत्र - १ [सरकारी पत्र के रूप से]

प्रेषक, श्री मनोहरलाल उपसचिव, भारत सरकार	संख्या १२३/२३ भारत सरकार खाद्य मंत्रालय
सेवा में सब राज्य सरकार नई दिल्ली - २	
दिनांक: ६-दिसंबर - २०२२	
विषय : खाद्यान्नों की वसूली	
महोदय, मुझे यह सूचित करने का निर्देश हुआ है कि देश में खाद्यान्नों की वर्तमान स्थिति को देखते हुए भारत सरकार ने यह निश्चय किया है कि अन्य बहुत राज्यों में सरकारों द्वारा अन्न की वसूली की जाए। प्रत्येक राज्य के लिए निर्धारित खाद्यान्नों की मात्रा तथा वसूली के खाद्यान्नों की कीमत के संबंध में विस्तृत सूचना शीघ्र ही भेज दी जाएगी। इस संबंध में आप जो कारवाई करें उसकी और खाद्यान्न वसूली की प्रगति की साप्ताहिक रिपोर्ट इस मंत्रालय को भेजते रहें।	भवदीय क. ख. ग उपसचिव, भारत सरकार

परिपत्र - २ [ज्ञापन के रूप में]

संख्या १२३/२३

भारत सरकार

स्वास्था मंत्रालय

नई दिल्ली-२, दिसंबर-६-२०२२

परिपत्र

इस मंत्रालय द्वारा सरकारी कर्मचारियों के लिए खोले गए चिकित्सालयों की सूची तथा मत वर्ष में उनसे लाभ उठाने वाले रोगियों का विवरण जानकारी के लिए भजा जा रहा है।

इस विवरण से यह स्पष्ट है कि इस समय ऐसे ५१० चिकित्सालय खुले हुए हैं, जिनमें गत वर्ष में १,२६,००० रोगियों की चिकित्सा की गई।

[हस्ताक्षर]

क. ख. ग.

उपसचिव, भारत सरकार

विवरण :

सब मंत्रालय तथा

संलग्न कार्यालयों को

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

क्रमांक म. द. ३/४ / सा.प. २००७/२६५३-१०. दि- २०-१२-२०२२

परिपत्र

विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि वे अपनी कार्यों के आगे शीशे पर विश्वविद्यालय का, निर्धारित स्ट्रीकर अवश्य लगाएँ और कार निर्धारित शेड में ही खड़ी करें, जिससे सुरक्षा व्यवस्था अनिकूल रहे।

ह. कुल सचिव

दिनांक

क्रमांक एम्. ह. सा/प २००७/२६५३-१०

प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु

१. सचिव, कुलपति -सूचनार्थ

२. सचिव, कुल सचिव

३. सचिव, परीक्षा नियंत्रक

४. समस्त अधिष्ठाता, विभिन्न संकाय

५. समस्त विभागध्यक्ष

६. समस्त उपकुल सचिव / शाखा -अधिकारी

७. निर्देशक, खेलकूद

८. जन संपर्क अधिकारी

९. सुरक्षा अधिकारी

अभ्यास प्रश्न – परिपत्र

- १) कर्नाटक सरकार पुलिस कमिशनर बैंगलूर की ओर से बैंगलूर में बढ़ते अपराध को देखते हुए शहर की सारी दुकानें रात १० बजे तक बंद करने का आदेश देते हुए परिपत्र लिखिए, जिसकी प्रतिलिपियाँ संबंधित अधिकारियों का भेजी जाय।
- २) उपसचिव, गृहमंत्रालय भारत सरकार की ओर में, सभी राज्यों के मुख्य सचिवों का आतंकवाद को रोकने के लिए ठोस उपाय करने की सूचना देते हुए एक परिपत्र लिखिए।
- ३) सचिव उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से राज्य उद्योग निर्देशकों को खादी उद्योगों को प्रोत्साहन दिलाने का सुझाव दे कर एक परिपत्र लिखिए।

कार्यालय –आदेश [office order]

कार्यालय आदेश को ऑफिसी में [office order] कहते हैं। कार्यालय आदेश शासकीय पत्रों का वह रूप है, जो किसी भी कार्यालय या मंत्रालय के कर्मचारियों को उनसे संबंध सूचनार्थ के एक प्रमुख सम्पर्क माध्यम के रूप में इनका प्रयोग किया जाता है। इसके अन्तर्गत नियुक्तियों अर्जित छुट्टियों की स्वीकृति तथा पद वृद्धि आदि की सूचना बहुत बार कार्यालय आदेश द्वारा दी जाती है। इसके द्वारा दिए गये आदेशों को अनुपालन करना संबंधित कर्मचारियों का परम कर्तव्य होता है।

इन प्रश्नों का प्रयोग निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होता है।

१. अवकाश स्वीकृत / अस्वीकृत करने की सूचना।
२. वियुक्ति और पदोन्नति की सूचना।
३. स्थायीकरण या स्थानान्तरण आदि की सूचना देने।
४. किसी विशेष कार्य-विधि के नवीनीकरण, परिवर्तन आदि की सूचना।
५. किसी प्रशासकीय आदेश के पालन के संबंध में सूचना आदि।
६. प्रशासन से संबंधित निर्देश की सूचना।

रचना शैली :- कार्यालय के आदेश कर्मचारियों के प्रति आदेश के रूप में होता है। इसमें उत्तम पुरुष [अन्य पुरुष] और एक वचन का प्रयोग किया जाता है। भाषा सरल, स्पष्ट तथा सीधी होनी चाहिए। ऐसे पत्रों में किसी प्रकार की औपचारिकता नहीं बरती जाती।

कार्यालय आदेश के अंग

१. पत्र संख्या
२. प्रेषक कार्यालय का नाम
३. स्थान और दिनांक
४. कार्यालय आदेश की विषय –वस्तु
५. प्रेषक का हस्ताक्षर और उसका पदनाम
६. पुरष्कर्तन

कार्यालय आदेश -१

संख्या १२३/२०२३

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली-२ दिनांक : ९ सितंबर २०२२

कार्यालय आदेश

केन्द्रीय सचिवालय-सेवा में चतुर्थ पदक्रम के अधिकारी के रूप में नियुक्त श्री च.छ.ज. को पदवृद्धि करके २ सितंबर २०२२ से गृह मंत्रालय में कार्यवाहक अनुभाग अधिकारी बनाया गया है ओपुर नए आदेश होने तक उनकी तैनाति [पोस्टिंग] रजनीतिक अनुभाग में की गई है।

क.ख.ग

अवर सचिव, भारत सरकार

प्रतिलिपि:

१. मंत्रालये के सब अधिकारी और अनुभाग
२. श्री च. छ. ज. [स्थापना]
३. श्री प. फ. ब

कार्यालय आदेश -२

संख्या १२३/२३

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली-२ दिनांक : ९ सितंबर २०२२

कार्यालय आदेश.

यह निश्चय किया गया है कि अब से आगे किसी भी अवर वर्ग लिपिक, प्रवर्ग लिपिक अथवा सहायक को कार्यालय की फाइल किसी भी दशा में घर ले जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

यशपाल

उपसचिव भारत सरकार

१. वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय के सब अधिकारी और अनुभाग।
२. स्थापना -१, के अवर सचिव के लिखि, सहायक

कार्यालय आदेश - २

संख्या १२३/२३

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली-२

दिनांक : २४ जुलाई २०२२

कार्यालय आदेश

निम्नलिखित महानुभावों के आज २००-१००-३०००-१५०-४५०० वेतन -
क्रम में उपरिवर्ग लिपिक के पद पर नियुक्त किया जाता है।

१. श्री रामलुभाया सिंह
२. श्री मायाराम
३. श्री बलवन्तसिंह

ओमप्रकाश वर्मा

उपचिव, भारत सरकार

सब संबंधी व्यक्तियों को

अभ्यास प्रश्न -कार्यालय-आदेश

१. पुलिस कमिशनर न् अई दिल्ली की ओर से राहर के समस्त पुलिस चौतियों को एक कार्यालय आदेश भेजकर सूचना दीजिए कि राज्य में विधुत अभाव के कारण राहर की सभी दुकाने रात के दस बजे तक बंद हो जानी चाहिए।
२. जुश्री नूरेन फातिमा, उपनिदेशक, शिक्षा विभाग, कर्नाटक राज्य की ओर से श्वेता छावरिया, लिपिक की ०१ अप्रैल २०२१ से ३० अप्रैल २०२१ तक की ३० दिन क/ई अर्जित छुट्टी स्वीकार करते हुए एक कार्यालय आदेश लिखिए।
३. परिनता, उपनिदेशक, केरल सरकार शिक्षा विभाग की ओर से सुश्री ममता चावला, लिपिक की ७० दिन की अर्जित छुट्टी स्वीकार करते हुए एक कार्यालय आदेश लिखिए।

अधिसूचना [Notification]

सरकार की ओर से जनसामान्य सरकारी कर्मचारियों तत्संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों की जानकारी के लिए अधिकारियों की नियुक्ति, सरकारी आदेश अवकाश और पद -त्याग आदि संबंधित सूचनाएँ जो सरकारी बजट में प्रकाशित होती है, उन्हें अधिसूचना [Notification] कहते हैं।

- अधिसूचना के कुछ नियम।
- अधिकारियों की नियुक्ति स्थानांतरण पद से हटाया, अवकाश, पदोन्नति आदि की सूचना प्रकाशित करने देती है।
- नियमों, आदेशों, अधिनियमों, नीतियों और शक्तियों के लागू होने की सूचना प्रकाशित करना।
- अधिकारियों के कार्यभार आदि अधिकारों की सूचना प्रकाशित करना।
- अधिसूचना का शब्दिक अर्थ होता है - अधिकारिक सूचना।
- किसी सूचना को अधिकारिक तौर पर प्रेषित करने को ही अधिसूचना कहते हैं।
- सरकार के राजपत्र, [गजट] में प्रकाशित की जाने वाली ऐसी सूचनाएँ जिनका अक्षरक्ष पालन किया जाना अनिवार्य होता है। अधिसूचना कहलाती है।
- राजपत्रों में सामान्यतया सरकारी नियम, आदेश, नियुक्ति, प्रतिनियुक्ति, संबंधित सूचनाएँ

भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय के उपसचिव को अर्जित अवकाश प्रदान किये जाने की अधिसूचना का प्रश्न प्रस्तुत कीजिए।

सूचना प्रसारण मंत्रालय

भारत सरकार

नई दिल्ली

सं १२/१२च / २०१०-११

दिनांक -१६ मार्च २०१०, नई दिल्ली

अधिसूचना / अवकाश

श्री क. ख. ग. उपसचिव, सूचना मंत्रालय, भारत सरकार को दिनांक ६ फरवरी २०११ से ४ मार्च, २०११ तक २७ दिन का चिकित्सकीय अवकाश स्वीकृत किया जाता है, तथा इस अवकाश की समाप्ति पर श्री क, ख, ग अपने वर्तमान पद पर पुनः कार्यरत होंगे।

अज्ञा से

(ह)-----

(अ,ब,स)

सचिव

प्रतिलिपि निम्न को आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित, संपादक, समस्त समाचार का।

अज्ञा से

(ह)-----

(अ,ब,स)

सचिव

भारत सरकार के गजट, भाग -१,

खंड -३ में प्रकाशनार्थ

भारत सरकार

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली

३० जनवरी २०२३

नियुक्ति

इस मंत्रालय के डॉ मनोज कुमार जो अनुसंधार अधिकारी के पद कार्यरत है, को २

फरवरी २०२३ से उपनिर्देशक [राजभाष] पद पर प्रति नियुक्ति [डिप्टी] रूप में नियुक्त किया जाता है।

आज्ञा से

(हं)-----

[क, ख, ग]

सयुक्त सचिव

विदेशी मंत्रालय

अधि संख्या

प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु

१. वेतन और लेखाधिकारी, विदेश मंत्रालय
२. अवसर सचिव, विदेश, मंत्रालय
३. डॉ मनोज कुमार, अनुसंधान अधिकारी

कार्मिक एवं प्रशासनिक विभाग, उ. प्र.

अनुभाग -

सं १५ ख/ १३ क/ २०२०-२१

दिनांक -१५ जून २०२० लखनऊ

अधिसूचना / वय वृद्धि

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा राज्य के समस्त शिक्षकों की सेवानिवृत्ति वय बढ़ाने का लिया गया है। तत् सन्दर्भ में सेवानिवृत्ति की वर्तमान सीमा ६० वर्षों से विस्तारित कर ६२ वर्ष कर दी गयी है।

१. उक्त विषय-जनवरी, २०२०-से-प्रभावी माना जाएगा

आज्ञा से

(हं)-----

(क, ख, ग)

मुख्य सचिव

प्रतिलिपि निम्न सूचनार्थ प्रेषित

१. सम्पादक, समस्त दैनिक समाचार पत्र।
२. अनुभाग अधिकारी, अभिलेखगार।
३. उप सचिव, शिक्षा विभाग, उ.प्र.।

आज्ञा से

(हं)-----

(क, ख, ग)

मुख्य सचिव

अभ्यास प्रश्न – अधिसूचना पत्र

1. गजट के भाग -१, अनुभाग-२ में प्रकाशनार्थ मुख्य सचिव, कर्नाटक सरकार की ओर से एक अधिसूचना तैयार कीजिए, जिसमें श्रीमती रश्मी, संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग को निदेशक की पदोन्नती होने की सूचना हो।
2. समाज कल्याण मंत्रालय, कर्नाटक सरकार के मुख्य सचिव श्री प्रागधीर आई.एस. को २५ दिन का उपाजित अवकाश प्रदान किया गया था, अवकाश समाप्ति पर उनकी सेवाएँ ३० नवंबर, २०१७ से सूचना व प्रसारण मंत्रालय को सौंप दी गयी है। इस संबंध में गजट में प्रकाशनार्थ एक अधिसूचना का प्रारूप तैयार कीजिए।

वाणिज्य एवं प्रशासनिक शब्दावली

1. Audit	लेखा परीक्षा
2. Administration	प्रशासन
3. Bearer cheque	धारक चेक
4. Bulk purchase	थोक खरीद
5. Chamber of commerce	वाणिज्य मंडल
6. Credit note	उधार पत्र
7. Down payment	तत्काल अदायगी
8. Dividend	लभांश
9. Export	निर्यात
10. Economic planning	आर्थिक आयोजन
11. Face value	अंकित मूल्य
12. Financial year	वित्तीय वर्ष
13. Grant	अनुदान
14. Gazette officer	गजपत्रित अधिकारी
15. Industrial area	औद्योगिक क्षेत्र
16. Insurance	बीमा
17. Joint Venture	संयुक्त उपक्रम
18. Liabilities	देयधन
19. Money market	मुद्रा बाजार
20. Manager	प्रबंधक
21. Notified	अधिसूचित
22. Ownership	स्वामित्व
23. Ordinance	अध्यादेश
24. Provident fund	भविष्य निधि
25. Profit and loss account	लाभ हानि लेखा
26. Registration	पंजीकरण

27. Sales tax
28. Tender
29. Undersigned
30. Wholesale

विक्रय कर
निविदा
अधोहस्ताक्षरी
धोक

प्रश्न – पत्रिका की नमूने

III Semester B.Com. Degree Examination,

Language Hindi

Kavya Rangan, Sarakari Patrachar, Paribhashik Shabdhavali

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए ।
10x1=10
2. निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो का संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए ।
2x7=14
3. किन्हीं एक प्रश्न का उत्तर लिखिए ।
1x16=16
4. किन्हीं एक विषय पर टिप्पणी लिखिए ।
1x5=5
5. पत्र-लेखन : (किन्हीं एक)
1x10=10
6. हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।
5x1=5